WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

# कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

आदर जैन का इनकार, नहीं हो रही गर्लफ्रेंड तारा सुतारिया से शादी

वर्षः 01 अंक : 301 | लखनऊ, बुधवार, 21 अक्टूबर, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

## जब तक वैक्सीन नहीं आती, तब तक कोरोना से जंग जारी रहेगी: मोदी

**नई दिल्ली, एजेंसी।** पीएम नरेंद्र मोदी मंगलवार शाम को देशवासियों को संबोधित किया। कोरोना संकट के बीच पीएम मोदी अब तक लोगों से कई बार ऐसे रूबरू हो चुके हैं, जिसमें कई बड़े ऐलान किए गए हैं। पीएम नरेंद्र मोदी के संबोधन को लेकर कई कयास भी लगाए जा रहे थे, जिनमें आने वाले त्योहारों से पहले लोगों के लिए सावधान करने सहित लोगों से नियमों का पालन करने की अपील की गई। इसमें कोरोना वैक्सीन को लेकर जानकारी दी। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि याद रखिए, जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं। एक कठिन समय से निकलकर हम आगे बढ़ रहे हैं, थोड़ी सी लापरवाही हमारी गति को रोक सकती है, हमारी खुशियों को धूमिल कर सकती है। जीवन की ज़िम्मेदारियों को निभाना और सतर्कता ये दोनो साथ साथ चलेंगे तभी जीवन में खुशियाँ बनी रहेंगी। दो गज की दूरी, समय-समय पर साबुन से हाथ धुलना और मास्क का ध्यान रखिए। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि बरसों बाद हम ऐसा होता देख रहे हैं कि मानवता को बचाने के लिए युद्धस्तर पर काम हो रहा है। अनेक देश इसके लिए काम कर रहे हैं। हमारे देश के वैज्ञानिक भी वैक्सीन के लिए जी-जान से जुटे हैं। भारत में अभी कोरोना की कई वैक्सीन्स पर काम चल रहा है। इनमें से कुछ

एडवान्स स्टेज पर हैं। कोरोना की वैक्सीन जब भी आएगी, वो जल्द से जल्द प्रत्येक भारतीय तक कैसे पहुंचे इसके लिए भी सरकार की तैयारी जारी है। एक-एक नागरिक तक वैक्सीन पहुंचे, इसके लिए तेजी से काम हो रहा है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि अगर आप लापरवाही बरत रहे हैं, बिना मास्क के बाहर निकल रहे हैं, तो आप अपने आप को, अपने परिवार को, अपने परिवार के बच्चों को, बुजुर्गों को उतने ही बड़े संकट में डाल रहे हैं। आप ध्यान रखिए, आज अमेरिका हो, या फिर यूरोप के दूसरे देश, इन देशों में कोरोना के मामले कम हो रहे थे, लेकिन अचानक से फिर बढ़ने लगे। जब तक सफलता पूरी न मिल जाए, लापरवाही नहीं करनी चाहिए। जब तक इस महामारी की वैक्सीन नहीं आ जाती, हमें कोरोना से अपनी लड़ाई को कमजोर नहीं पड़ने देना है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि सेवा परमो धर्म- के मंत्र पर चलते हुए हमारे डॉक?टर्स, नर्स, हेल?थ वर्कर्स इतनी बड़ी आबादी की निस्वार्थ सेवा कर रहे हैं। इन सभी प्रयासों के बीच, ये समय लापरवाह होने का नहीं है। ये समय ये मान लेने का नहीं है कि कोरोना चला गया, या फिर अब कोरोना से कोई खतरा नहीं है। हाल के दिनों में हम सबने बहुत सी तस्वीरें, वीडियो देखे हैं जिनमें साफ दिखता है कि कई लोगों ने अब सावधानी बरतना बंद कर दिया है। ये ठीक नहीं है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि लेकिन हमें ये भूलना नहीं है कि लॉकडाउन भले चला गया हो, वायरस नहीं गया है। बीते 7-8 महीनों में, प्रत्येक भारतीय के प्रयास से, भारत आज जिस संभली हुई स्थिति में हैं, हमें उसे बिगड़ने नहीं देना है।

## चारधाम नियंत्रण मामले में स्वामी पहुंचे सुप्रीम कोर्ट

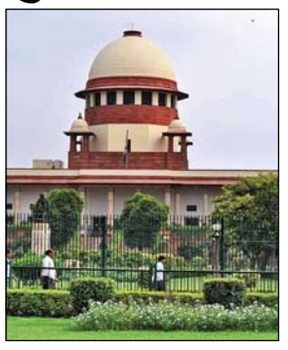

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** भारतीय जनता पार्टी नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी ने चारधाम देवस्थान प्रबंधन बोर्ड के जरिये चारों धाम एवं 51 अन्य तीर्थस्थलों पर सरकारी नियंत्रण को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी है। श्री स्वामी ने उत्तराखंड उच्च न्यायालय के 21 जुलाई 2020 के उस फैसले के खिलाफ शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है, जिसके तहत उनकी याचिका निरस्त की गयी थी। श्री स्वामी ने चारधाम देवस्थानम प्रबंधन बोर्ड का गठन करके चारों धामों और अन्य 51 तीर्थ स्थानों पर राज्य सरकार द्वारा नियंत्रण लिये जाने को उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी, जहां से उन्हें निराशा हाथ लगी थी, उसके बाद वह सर्वोच्च न्यायालय पहुंचे हैं। भाजपा नेता ने कहा है कि भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में केवल मंदिर ही सरकार के नियंत्रण में है, जबकि मस्जिद और अन्य धार्मिक स्थल नहीं। उन्होंने चारों धाम मंदिर और अन्य 51 तीर्थस्थलों को सरकार के नियंत्रण से मुक्त कराने की मांग की है। इस मामले में दो गैर-सरकारी संगठनों - 'पीपुल फॉर धर्म' और 'इंडिक कॉलेक्टिव ट्रस्ट'- ने भी उच्च न्यायालय के खिलाफ याचिकाएं दायर की हैं। उच्च न्यायालय ने गत 21 जुलाई को दिये फैसले में चारधाम देवस्थानम् प्रबंधन एक्ट, 2019 की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा है।

## कोरोना के मामले 75.97 लाख सक्रिय मामले घटकर 7.48 लाख

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** देश में कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण का आंकड़ा लगातार बढ़ते हुए 75.97 लाख हो गया है वहीं स्वस्थ होने वालों की मरीजों की संख्या बढ़ने से सक्रिय मामले घटकर 7.48 लाख पर आ गये हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले 24 घंटों में 46,790 नये मामले आये और संक्रमितों की कुल संख्या 75,97,063 हो गयी। इसी अवधि में 69,720 लोगों ने कोरोना को मात दी है और इसे मिलाकर देश में अब तक 67.33 लाख मरीज कोरोनामुक्त हो चुके हैं। नये मामलों की तुलना में स्वस्थ होने वालों की संख्या अधिक होने से सक्रिय मामले 23,517 घटकर 7,48,538 हो गये हैं। इस दौरान 587 कोरोना संक्रमितों की मौत हुई और इस संख्या को मिलाकर अब तक 1,15,197 लोगों की कोरोना से मौत हो चुकी है। देश में स्वस्थ होने वालों की दर 88.63 प्रतिशत और सक्रिय मामलों की दर 9.85 प्रतिशत पर आ गयी है जबकि मृत्यु दर अभी 1.51 फीसदी है। कोरोना महामारी से सबसे अधिक प्रभावित महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के दौरान सक्रिय मामले 9210 कम होकर 1.74 लाख रह गये हैं जबकि 125 की मौत होने से मृतकों की संख्या 42,240 हो गयी है। इस दौरान 15,069 लोग संक्रमणमुक्त हुए जिससे स्वस्थ हुए लोगों की संख्या बढ़कर 13.84 लाख हो गयी।

## रामविलास पासवान के श्राद्ध में सीएम नीतीश और तेजस्वी भी पहुंचे

**पटना, एजेंसी।** रामविलास पासवान के श्राद्ध कार्यक्रम में मंगलवार को देश के सभी राजनीतिक दलों के आला नेता पहुंचे। सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के अलावा बिहार के कई बड़े राजनेता भी इस मौके पर मौजूद थे। चिराग पासवान ने इस दौरान सीएम नीतीश के पांव को छूकर आशीर्वाद लिया। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर लोजपा अध्यक्ष चिराग पासवान बुधवार को अपनी पार्टी का घोषणापत्र जारी करेंगे। उसी दिन से उनका चुनावी दौरा भी शुरू होगा। मंगलवार को पार्टी के संस्थापक रामविलास पासवान का श्राद्धकर्म है। इसके अगले दिन से चिराग क्षेत्र में निकलेंगे। बता दें कि लोजपा प्रमुख चिराग पासवान इस बार के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार पर लगातार हमला बोलते आ रहे हैं।

## राहुल की नाराजगी को कमलनाथ ने हल्के में लिया, कहा- नहीं मांगूंगा माफी

**नई दिल्ली, एजेंसी।** कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मध्य प्रदेश में बीजेपी नेता इमरती देवी पर कमलनाथ की आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर पर नाराजगी जाहिर की है। राहुल गांधी ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल कमलनाथ ने किया वह उन्हें पसंद नहीं और वह इसे बढ़ावा नहीं देते हैं, चाहे कोई भी हो। हालांकि, राहुल ने यह नहीं कहा कि पार्टी कमलनाथ के खिलाफ कोई ऐक्शन लेगी या नहीं। इस बीच कमलनाथ ने कहा है कि यह राहुल गांधी की राय है और वह माफी नहीं मांगेंगे। राहुल गांधी ने कहा, कमलनाथ जी मेरी पार्टी से हैं, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मैं इस तरह की भाषा को पसंद नहीं करता, जिसे कमलनाथ जी ने इस्तेमाल किया। मैं इसकी तारीफ नहीं करता, चाहे कोई भी हो। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। पत्रकारों ने राहुल गांधी से कमलनाथ की उस टिप्पणी को लेकर सवाल किया था जिसमें उन्होंने मध्य प्रदेश की महिला मंत्री को आइटम बताया था। राहुल गांधी ने कहा, मैं सोचता हूं कि हमारे देश में महिलाओं के साथ व्यवहार में हर स्तर पर सुधार की जरूरत है, चाहे कानून व्यवस्था की बात हो या उनके सम्मान की, या फिर बिजनेस, सरकार या दूसरे क्षेत्रों में उन्हें जो जगह दी जा रही है...हमारी महिलाएं हमारा गर्व हैं और उनकी रक्षा होनी चाहिए। कोई भी हो... मैं इस तरह की भाषा पंसद नहीं करता।

## महामारी के कारण 40 फीसदी तक घट सकता है निजी अस्पतालों का परिचालन लाभ

**नई दिल्ली, एजेंसी।** कोरोना वायरस महामारी की वजह से चालू वित्त वर्ष में निजी क्षेत्र के अस्पतालों के परिचालन लाभ में करीब 40 फीसदी की गिरावट आएगी। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि महामारी की वजह से अस्पतालों की बिलिंग में जबर्दस्त गिरावट आई है। महामारी की वजह से लोग अस्पताल जाने से कतरा रहे हैं। वे अत्यंत आवश्यक होने पर ही अस्पताल जा रहे हैं। हालांकि क्रिसिल की मंगलवार को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि बड़ी संख्या में महामारी के मामलों की वजह से इन अस्पतालों को 15 से 20 फीसदी का अतिरिक्त राजस्व मिल सकता है। हालांकि, ऐसे मामलों में मार्जिन काफी कम रहेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि लॉकडाउन और यात्रा अंकुशों में ढील के बाद जुलाई से अस्पतालों में आने वाले लोगों की संख्या बढ़ी है।

## इकबाल मिर्ची के परिवार के खिलाफ ईडी की कार्रवाई

### 22 करोड़ से यादा की संपत्ति जब्त

**नई दिल्ली, एजेंसी।** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने धनशोधन से संबंधित एक मामले में गैंगस्टर इकबाल मिर्ची के परिवार की 22 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति जब्त की है। ईडी ने मंगलवार को बताया कि जब्त की गई संपत्तियों में एक सिनेमा हॉल और मुंबई स्थित एक होटल भी शामिल है। संपत्तियों को जब्त करने के लिए धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत एक अनंतिम आदेश जारी किया गया है। इस संबंध में केंद्रीय जांच एजेंसी ने एक बयान में कहा, जब्त की गई संपत्तियों में मुंबई में स्थित एक टाकीज (सिनेमा हॉल) और एक होटल, एक निर्माणाधीन होटल, एक फार्म हाउस, दो बंगला और पंचगनी में 3.5 एकड़ जमीन शामिल है। बयान में प्रवर्तन निदेशालय ने कहा कि जब्त की गई संपत्तियों की कुल कीमत 22.42 करोड़ रुपये है और इसमें सात बैंक खातों में जमा राशि भी शामिल है। धन शोधन के इस मामले में इकबाल मिर्ची और उसके परिवार के खिलाफ अब तक कुल 798 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की गई है। एजेंसी ने इससे पहले जब्ती आदेश जारी किया था। इसमें विदेश में स्थित 203 करोड़ रुपये की संपत्ति भी शामिल है। बता दें कि इकबाल मिर्ची की साल 2013 में लंदन में मौत हो गई थी। माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम के सहयोगी मिर्ची पर मादक पदार्थों की तस्करी और उगाही से रकम हासिल करने के आरोप लगाए गए थे। ईडी ने पहले कहा था कि इकबाल मिर्ची मादक पदार्थ का अंतरराष्ट्रीय तस्कर था, जिसने दुनियाभर में अपार चल-अचल संपत्ति अर्जित की थी।

### हाथरस केस में नया खुलासा

## जेल में बंद 4 आरोपियों में से एक नाबालिग निकला सीबीआई ने सस्पेंड पुलिसकर्मियों से पूछे सवाल

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** उत्तरप्रदेश के हाथरस में दलित युवती से कथित गैंगरेप और उसकी मौत के केस की जांच सीबीआई कर रही है। इस बीच, सीबीआई के हाथ एक ऐसा सबूत हाथ लगा है, जो इस केस में शुरुआत से ही सवालों में घिरी पुलिस के खिलाफ है। अलीगढ़ जेल में बंद चारों आरोपियों में से एक नाबालिग निकला है। इसका खुलासा उसके घर से बरामद हाईस्कूल की मार्कशीट से हुआ है। मार्कशीट सामने आने के बाद सीबीआई ने घटना के बाद सस्पेंड हुए पुलिसकर्मियों से पूछताछ की है। आरोपी ने 2018 में जेएस इंटर कॉलेज से हाईस्कूल की परीक्षा पास की है। मार्कशीट पर उसकी जन्मतिथि 2 दिसंबर 2002 लिखी है। ऐसे में अभी उसकी उम्र 17 साल 10 माह है। 14 सितंबर को जब वारदात हुई तब वह 17 साल 9 महीने 12 दिन का था। इसके बावजूद उसे अन्य आरोपियों की तरह जेल भेज दिया गया। ऐसे में बड़ा सवाल उठता है कि जेल भेजने से पहले क्या उसकी मेडिकल जांच नहीं हुई थी? अब पुलिस पर दस्तावेजों को दरकिनार करने का आरोप लग रहा है। हाथरस केस में सीबीआई जांच का आज 10वां दिन है। दोपहर साढ़े 12 बजे सीबीआई की एक टीम घटनास्थल पर पहुंची। यहां चश्मदीद छोटू को बुलाकर पूछताछ की गई। पीड़ित के भाई ने बताया कि सीबीआई ने उनसे पूछा है कि कोई परेशानी तो नहीं है। घटना के बारे में किसी तरह की और पूछताछ नहीं की। सीबीआई छत पर गई और कुछ जांच की। पीड़ित के भाई ने एक आरोपी नाबालिग होने के मामले में कुछ भी बोलने से मना कर दिया। इस दौरान आरोपियों के घर से पीड़ित के घर की दूरी को भी नापी गई है। सीबीआईने घटनास्थल पर लगी बाजरे की फसल को छोड़कर खेत मालिक से अन्य फसल काटने के लिए कहा है। दरअसल, खेत मालिक ने फसल नुकसान की बात कहते हुए सरकार से मुआवजा मांगा था।

## जम्मू-कश्मीर में पुलवामा में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़, तीन आतंकी ढेर

**जम्मू, एजेंसी।** दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले के काकापोरा इलाके में चल रही मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने तीन आर्तांकियों को मार गिराया है। एक अधिकारी ने मुठभेड़ की जानकारी देते हुए बताया कि अब तक तीन आर्तांकियों को मार गिराया गया है। हालांकि अभी उनकी पहचान नहीं हो पाई है। ऑपरेश सफल रहा है। उन्होंने बताया कि आर्तांकियों के छिपे होने की सूचना पर सेना की 50 आरआर, एसओजी और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम ने हकरीपोरा इलाके में तलाशी अभियान चलाया। सुरक्षाबलों ने जैसे ही संदिग्ध मकान को घेरा तो आर्तांकियों ने उनपर फायरिंग कर दी। सुरक्षाबलों ने भी जवाबी कार्रवाई में उनपर फायरिंग की, जिसमें तीन आर्तांकी ढेर हो गए।

## कोरोना के बावजूद वोट प्रतिशत बढ़ाने में जुटा चुनाव आयोग

**पटना, एजेंसी।** कोरोना महामारी के बीच चुनाव आयोग बिहार विधानसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ाने में जुटा है। तीन दिवसीय बिहार दौरे के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा ने बिहार में 60 फीसदी तक मतदान प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद जतायी थी। आयोग के निर्देश पर राज्य के सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम को लेकर विशेष पहल की जा रही है। वहीं, सोशल मीडिया के माध्यम से भी चुनाव आयोग द्वारा मतदाता जागरूकता के प्रयास किए जा रहे हैं। बिहार में आजादी के बाद लगभग 70 वर्षों में हुए 16 विधानसभा चुनावों में मतदान प्रतिशत में 17.4 फीसदी ही बढ़ोतरी हुई है। 1952 के बिहार विधानसभा चुनाव में 39.51 फीसदी मतदान हुआ था, जबकि 2015 के चुनाव में मतदान प्रतिशत 52.73 फीसदी रहा था। वहीं, बिहार में विधानसभा चुनाव दर चुनाव राजनीतिक दलों की संख्या में दस गुना तक वृद्धि दर्ज की गयी है। 1952 में हुए पहले बिहार विधानसभा चुनाव में 16 राजनीतिक दल चुनाव में शामिल हुए थे, जबकि 2015 में इनकी संख्या बढ़कर 156 हो गयी। इसके साथ ही राजनीतिक दलों द्वारा मैदान में उतारे जाने वाले प्रत्याशियों की संख्या में भी अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई। राज्य में 1972 के बाद हुए विधानसभा चुनावों में मतदान प्रतिशत में उतार-चढ़ाव आते रहे। वर्ष 2000 में सर्वाधिक 62.57 फीसदी मतदान हुआ था। यह अब तक का रिकॉर्ड मतदान है।

## तेलंगाना में भारी बारिश की चेतावनी, अगले सप्ताह तक भी जारी रह सकता है मानसून

**हैदराबाद, एजेंसी।** तेलंगाना में दक्षिण पश्चिम मानसून का प्रभाव अभी भी देखने को मिल रहा है। राज्य में यह अब भी सक्रिय है। बंगाल की खाड़ी के ऊपर बनने वाली नई मौसम प्रणालियों ने दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी को और आगे बढ़ा दिया है। आमतौर पर 15 अक्तूबर तक मानसून खत्म हो जाता था लेकिन इस बार यह अभी तक बना हुआ है। पिछले साल, दक्षिण-पश्चिम मानसून 16 अक्तूबर तक खत्म हो गया था। इस साल दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी अक्तूबर के दूसरे सप्ताह तक होने का अनुमान था लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बंगाल की खाड़ी में बने कम दबाव के कारण तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में भारी से भारी बारिश होने की संभावना है। हैदराबाद और अमरावती मौसम विभाग ने अनुमान जताया है कि राज्य में 22 अक्तूबर तक भारी से भारी बारिश होगी। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि भारी बारिश और तेज हवाओं के कारण पेड़ और बिजली के खंभे गिर सकते हैं। लोगों को अपने-अपने घरों में रहना चाहिए। बाढ़ का खतरा बना हुआ है। मानसून अगले सप्ताह तक जारी रह सकता है। सोमवार की रात दो बजे हैदराबाद के कई इलाकों में 3 मिमि से अधिक बारिश दर्ज की गई है। हैदराबाद के मौसम विभाग ने चार दिन और तेलंगाना में भारी बारिश का अनुमान बताया है। वहीं मंगलवार को बंगाल की खाड़ी में बने गंभीर चक्रवात के कारण प्रदेश में भारी बारिश हो सकती है। इसके चलते अधिकारियों ने पूर प्रदेश में अलर्ट जारी किया है। हैदराबाद के मूसी नदी के तटीय इलाके के लोगों को सतर्क किया गया है।

## ग्रामीण क्षेत्र में इस्पात की खपत बढ़ने से सबको होगा लाभ:प्रधान

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** केंद्रीय इस्पात मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने आज कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में इस्पात की खपत बढ़ने का फायदा सिर्फ स्टील उद्योग को नहीं होगा बल्कि इससे रोजगार के नये अवसर बढ़ेंगे, आत्मनिर्भरता बढ़ेगी और राजस्व भी बढ़ेगा। श्री प्रधान ने मंगलवार को आयोजित एक वेबिनार में गांवों के विकास और उनकी संपन्नता में भारतीय स्टील क्षेत्र की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि एक लाख करोड़ रुपये के कृषि अवसंरचना कोष का फंड बैंकों के माध्यम से खर्च होना शुरू हो गया है। इसी वित्तीय वर्ष से यह खर्च शुरू हो गया है। कई क्षेत्रों को प्राथमिकता क्षेत्र में लाया गया है। केंद्रीय इस्पात मंत्री ने कहा कि अधिकतर क्षेत्र आपस में जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में स्टील की मांग को प्रोत्साहित करने अत्यधिक अवसर हैं। हाल में घोषित कृषि अवसंरचना कोष, 5,000 से अधिक कंप्रेस्ड बायोगैस प्लांट की स्थापना और अन्य कई सरकारी पहलों के तहत शुरू की गयी परियोजनाओं में इस्पात का इस्तेमाल अधिक है। आने वाले चार-पांच साल में 1,500 करोड़ मीट्रिक टन सीबीजी बनानी की योजना है। लाखों करोड़ रुपये का वित्तीय निवेश इस मद में होना है। विश्व बैंक ने हाल में सीबीजी को प्राथमिका क्षेत्र की श्रेणी में शामिल किया है। सरकार ने चावल से इथोनॉल बनाने का लक्ष्य रखा है और इसके लिए कई सारे संयंत्र बनें और इन सभी में इस्पात की खपत होगी।

# किसान बनकर पहुंचे उपजिलाधिकारी ने खाद की दुकान पर कालाबाज़ारी देख दो खाद की दुकान किया सील

**महाराजगंज।** नौतनवा बीते सोमवार की देर शाम नेपाल को हो रही खाद तस्करी की सूचना पर पहुंचे एसडीएम नौतनवा प्रमोद कुमार ने थाना परसामलिक क्षेत्र के जिगिना मे स्थित खाद की दो दुकानों को किया सील, एक चाय की दुकान पर घंटों बैठकर देखते रहे दुकानदार का कारनामा इस दौरान दुकानदार ने 16 बोरी यूरिया बेचा।

जानकारी के लिए बता दे परसामलिक थाना क्षेत्र मे स्थित खाद की दुकानों से हो रही कालाबाजारी और नेपाल को जा रही सभी भारतीय खाद पर अंकुश लगाने के लिये बीते सोमवार की देर रात उपजिलाधिकारी नौतनवां पहुचे खाद की दुकान पर जहा खाद की दुकाने देर रात तक खुली मिली उपजिलाधिकारी नौतनवा प्रमोद कुमार ने अपनी गाडी दुकान से दुर खडा कर पहुचे जिगिना स्थित दूबे ट्रेडर्स खाद की दुकान पर जहां एसडीएम ने दो बोरी युरिया खाद स्वयं खरीदा इस दौरान दुकानदार रामानुज दूबे ने एसडीएम से लिया 700 सौ रुपये नगद जिसका वीडियो भी उपजिलाधिकारी ने बनवा रखा है। जांच में पाया गया कि यूरिया खाद प्रति बोरी (45 केजी) पर दुकानदार द्वारा ?350 रुपया वसूला जाता है जिसका उचित मूल्य ?266 प्रति बोरी है। साथ ही दुकानदार ने यह भी बताया कि जो स्मगलर है/ तस्कर हैं उनको मेरे द्वारा ?360 में यूरिया खाद दिया जाता है और किसानों को ?350 में दिया जाता है। इस दौरान एसडीएम

ने खाद की दुकान को सील कर दिया और पीओएस मशीन को अपने कब्जे में लिया दुकानदार ने एसडीएम को स्टाक रजिस्टर जैसे कई दस्तावेज नही दिखा सका वही दुसरे दुकानदार बशीर आलम पुत्र वकील अहमद निवासी ग्राम पंचायत चकदह, महाराजगंज द्वारा ग्राम जिगिना में खाद की दुकान चलाया जाता है। जिस पर स्वयं खरीदार बनकर एसडीएम द्वारा मारा गया छापा जहां प्रति बोरी वजन 45 किलो खाद का दुकानदार के द्वारा लिया जाता है। ?350 रुपया इस दौरान एसडीएम के पूछताछ मे दुकानदार ने बताया की तस्कर को ?400 प्रति बोरी यूरिया की सप्लाई की जाती है एसडीएम ने दुकान का स्टॉक जांच किया जहा स्टाक रजिस्टर मेनटेन नही मिला पीओएस मशीन बंद मिली सभी को कब्जे मे लेकर दुकान को सील कर दिया और अग्रिम कार्रवाई हेतु जिला कृषि अधिकारी को निर्देशित कर वापस चले गये। इस संन्दर्भ मे एसडीएम नौतनवां प्रमोद कुमार ने बताया की जिगिना और जमुहानी की दुकानों से सभी खाद रेहरा पहुच रहा था जिसकी सूचना हमेशा मिलता था जांच मे सूचना सत्य मिला और कार्यवाही किया गया है। बताते चले उपजिलाधिकारी ने कहा किसी भी कीमत पर तस्करी नही होने दिया जायेगा जो भी संनलिप्त मिलेगा उस पर कानूनी कार्यवाही किया जायेगा।

# संस्कार भारती की निःशुल्क ऑनलाइन संगीत कार्यशाला का हुआ उद्घाटन

## गौरी गणेश, मनायों मेरी देवरानी, लड्डू के भोग लगायो, मेरी देवरानी

**बस्ती।** संस्कार भारती बस्ती इकाई द्वारा निःशुल्क ऑनलाइन संगीत कार्यशाला का उद्घाटन प्रांतीय कार्यकारी अध्यक्ष डा. कैप्टन पुष्पलता मिश्रा ने दीप प्रज्वलित करके किया, बताया कि संगीत की विलुप्त होती परम्परागत गीत एव संस्कार गीत की विधा को सीखाया जाना है।

नगर अध्यक्ष सत्या पांडेय ने बताया कि कोविड 19 (कोरोना वायरस)को दृष्टिगत रखते हुए इस बार की कार्यशाला आयोजन ऑनलाइन करवाया जा रहा है,जो 27 अक्टूबर तक चलेगा,जिससे सायं 5 बजे से जुड़ा जा सकता है। कार्यशाला संयोजिका एवं संस्कार भारती की सांस्कृतिक प्रमुख डॉ. रंजना अग्रहरि ने बताया की ऐसे आयोजनों से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। महामंत्री विकास श्रीवास्तव ने बताया कि इस कार्यशाला में संगीत सीखने के लिए कलासाधक ऑनलाइन जुड़ सकते हैं, कार्यशाला से लाइव गूगल मीट के द्वारा जुड़ा जा सकता है।

कार्यशाला के मीडिया प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि सामाजिक सरोकारों से जुड़ी संस्था संस्कार भारती नित नये आयाम तय करते हुये समाज हित में सदैव कार्य करती रहेगी। कार्यशाला प्रशिक्षिका आकाशवाणी लखनऊ की कलाकार आरती पांडेय का गौरी गणेश मनायों मेरी देवरानी,लड्डू के भोग लगायो मेरी देवरानी सबसे अधिक सराही और दुहराई गयी। लता सिंह,उषा पांडेय,डॉ. रमा शर्मा, अर्चना गुप्ता, कल्पना अग्रवाल, पिंजला, संदीप श्रीवास्तव, रीता श्रीवास्तव, शिवांगी आदि की सहभागिता रही।

# श्रीमाधव कुंज मन्दिर में 16वीं पुण्यतिथि पर स्वामी बेनीमाधवदास को सन्तों ने किया नमन

**अयोध्या।** सरयू तट निकट श्री माधव कुंज मंदिर में मंगलवार की सुबह स्वामी श्री श्री 1008 ब्रह्मलीन श्री बेनी माधवदास जी महाराज की 16वीं पुण्यतिथि बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। यह आयोजन महामंडलेश्वर श्री शिवरामदास जी फलाहारी के पावन सानिध्य में मनाया गया। इस मौके पर मंदिर में विधि-विधान पूर्वक काल विशेष पूजन अर्चन व धार्मिक कार्यक्रम हुए।

इसके उपरांत साकेतवासी स्वामी बेनीमाधवदास के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके शिष्य महामंडलेश्वर श्रीशिवरामदास जी फलाहारी महाराज ने उनको अद्वितीय व प्रकांड धार्मिक सन्त बताया। उन्होंने बताया कि स्वामीजी का व्यक्तित्व काफी विशाल रहा। वे निर्मल छवि, त्याग व तपस्या के प्रतिमूर्ति रहे। उनकी महिमा अनन्त रही है। उन्होंने अपने बहुत से शिष्य को अच्छा मार्ग प्रदान किया। उनके शिष्य अन्यंत्र जगहों पर है।

स्वामीजी का सानिध्य हम सबको सदमार्ग प्रदान करता है। जबकि स्वामी अंगददास जी ने कहा कि स्वामी बेनी माधव दास जी सन्तो में महान संत थे। उनकी कमी खलती है लेकिन आज भी उनकी कृपा हम सब पर बनी है। इसके उपरांत अयोध्या के अन्य सन्त महंत शिष्यों ने भी उनके व्यक्तित्व व कृतत्व में व्यापक प्रकाश डाले। इसके बाद सन्त महंत व शिष्यों का विराट भंडारा आयोजित किया गया। जिसमें अयोध्या के महंत सुरेश दास, महंत जनमेजय शरण, डॉ रामा नन्ददास, श्रीराम मंदिर शांति भवन बिहार के महंत भरतदास, स्वामी अगन्द दास, महंत धर्मदास, महंत मैथिली रमण शरण, महंत उमेशदास, महंत बृजमोहनदास, महंत प्रेमदास, महंत प्रेमशंकरदास, महंत रामभवनदास, महंत रामप्रियदास, सुधीरदासजी सहित अन्य सन्त शिष्य शामिल रहे। इस कार्यक्रम में समागत लोगो का महामंडलेश्वर स्वामी श्री शिवरामदास जी फलाहारी ने अंग वस्त्र व दक्षिणा आदि भेंटकर स्वागत सत्कार किया।

# व्यक्तिगत पैरवी करने वाले चौकी प्रभारी बेतियाहाता निलंबित

गोरखपुर/मकान मालिक और किराएदार के झगड़े में व्यक्तिगत पैरवी करने वाले चौकी प्रभारी को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने किया निलंबित। कैंट थाना क्षेत्र के बेतियाहाता चौकी अंतर्गत मकान मालिक हरदयाल किरायेदारों महेंद्र श्रीवास्तव प्रदीप व अफजाल के बीच में काफी दिनों से विवाद चल रहा था जिसमें मकान मालिक के तरफ से व्यक्तिगत पैरवी करते हुए चौकी इंचार्ज ने कहा कि 376 व 354 के तहत मुकदमा दर्ज कराओ तो अगले को रगड़ कर भूसी छुड़ा देंगे हुआ वैसा ही कैंट थाने में 354 504 506 के तहत मुकदमा दर्ज कराते हुए पिता पुत्र को जेल भेजने का कार्य किया जो कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जोगिंदर कुमार का सख्त निर्देश है कि अगर किसी महिला द्वारा किसी व्यक्ति के ऊपर 354 या 376 का मुकदमा दर्ज कराया जाता है तो उक्त महिला का कोर्ट में बयान कराने के बाद उक्त मुकदमे में परीक्षण करने के बाद ही आरोपी को जेल भेजा जाए और साथ में ही एसएसपी ने अपने मातहतों को यह भी निर्देश दिया है कि जमीन विवाद तथा मकान मालिक और किराएदार के विवादों में पुलिस व्यक्तिगत ना पड़े राजस्व विभाग व कोर्ट का जैसा निर्देश हो उसका अनुपालन किया जाए लेकिन चौकी प्रभारी बेतियाहाता अमित चतुर्वेदी ने ऐसा न करते हुए वादी का मदद करते हुए पीड़ित के ऊपर विशेष दबाव बनाते हुए जेल भेजने में अहम भूमिका निभाई प्रथम दृष्टया चौकी प्रभारी दोषी पाए गए हैं जिसके तहत उन्हें तत्काल प्रभाव से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने निलंबित किया।

# बैग में बम की सूचना पर गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर मचा हड़कंप, 20 मिनट दम साधे खड़े रहे लोग

गोरखपुर/रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर मंगलवार को दोपहर उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक बैग में बम होने की सूचना मिली। मौके पर दौड़ते भागते पहुंचे जीआरपी के जवानों ने पूरी एहतियात के साथ बैग को चेक किया। अच्छे से बैग की तलाशी लेने के बाद उन्होंने अपने अधिकारियों को अस्वस्थ किया कि बैग में कोई बम नहीं है। इसके साथ वहां जुट गए लोगों ने भी राहत की सांस ली।

थोड़ी देर पहले जहां लोग दौड़ते भागते जवानों को देखकर परेशान हो रहे थे, वही अब उन्हें यह मालूम चल गया था कि यह तो बस एक मॉक ड्रिल थी। किसी इमरजेंसी या संकट काल में लोगों की सुरक्षा के लिए तत्काल एक्शन में आने के लिए जीआरपी सहित अन्य सुरक्षा बलों औश्र पुलिस के जवान अक्सर मॉक ड्रिल करते रहते हैं। मंगलवार को ऐसी ही एक ड्रिल के तहत अचानक यह सूचना प्रसारित की गई की रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर एक बैग में बम है।

यह सूचना मिलते ही जीआरपी के सिपाहियों ने घेरा बनाकर यात्रियों को रोक दिया। बैग के आसपास मौजूद लोगों को सुरक्षित हटा लिया गया। बम निरोधक दस्ते के सदस्यों ने तुरंत बैग को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद बैग की तलाशी शुरू की गई। तलाशी में बैग में कुछ नहीं मिला। इससे जीआरपी के जवानों ने राहत की सांस ली। मॉक ड्रिल करीब 20 मिनट तक चली। इस दौरान वहां मौजूद यात्री भी दम साधे खड़े रहे। मॉक ड्रिल का पता चलने पर उन्होंने भी राहत की सांस ली।

# दस हजार अग्रिम पैकेज देने की घोषणा से बाजारो में बढ़ेगी रौनक

बस्ती। भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के जिला संयोजक बस्ती ने केंद्र सरकार की तरफ से सरकार द्वारा भी प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों को ?10000 की राशि देने के प्रस्ताव का स्वागत करते हुए कहा कि सरकार दीपावली पर्व पर बाजारों में खरीदारी बढ़ने से रौनक आएगी राधेश्याम कमलापुरी ने कहा कि केंद्र सरकार की तर्ज पर उत्तर प्रदेश सरकार ने भी कर्मचारियों को ?10000 अग्रिम धनराशि देने की घोषणा की है इससे त्योहारी सीजन में व्यापार चलने की संभावनाएं बढ़ गई है इस तरह की घोषणा से आम छोटे बड़े व्यापारियों का हौसला भी बुलंद हुआ है कोरोना संकट काल के कारण विगत 6 महीने से बाजार लगभग बंद होने के कारण व्यापारियों में निराशा घर कर गई थी मगर आने वाले दिनों व्यापारियों को उत्साह के साथ स्वागत करना चाहिए कमलापुरी ने कहा कि कोरोना संकटकाल में आम जनों में

खर्च कम करते हैं पैसा बचाया है तथा उसे इन्हें त्योहारों के लिए सुरक्षित रखा है दीपावली को हिंदुस्तानी दिवाली मनाने में भी सहयोग करेंगे यानी इस दीपावली पर केवल भारत निर्मित सामान का ही प्रयोग करेंगे तथा बेचेंगे और खरीदेंगे चीनी सामान का बहिष्कार करेंगे।

# जमीन पर कब्जा दिलाने की मांग व्यापारियों ने सौंपा ज्ञापन

**बस्ती।** बस्ती शहर के गांधीनगर स्थित कटेश्वरपार्क के सामने की जमीन को लेकर शहर के दो व्यापारियों में गलत फहमी पैदा हो गई है और उच्चाधिकारियों के निर्देश के बावजूद मामला तूल पकड़ता जा रहा है। मंगलवार को अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल के जिला महामंत्री संगठन वृजेश प्रताप सिंह 'मुन्ना' के संयोजन में व्यापारियों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन देकर प्रकरण में न्यायोचित कार्रवाई किये जाने की मांग किया।

सन्तोष कुमार त्रिपाठी ने जिलाधिकारी को गत 7 अक्टूबर को पत्र देकर न्याय की गुहार लगाया था। डीएम ने दोनों पक्षों को बुलाकर न्यायोचित निर्णय करने का निर्देश एसडीएम एवं शहर कोतवाल को दिया था । पत्र में कहा गया है कि सन्तोष कुमार त्रिपाठी ने भू-स्वामी पंकज श्रीवास्तव से 19 वर्ग मीटर जमीन का बैनामा कराया। जब उन्होने बैनामा शुदा जमीन पर कब्जा करना चाहा तो पड़ोसी वीरेन्द्र कुमार चौरसिया द्वारा अवरोध उत्पन्न किया जा रहा है। सन्तोष ने एक पक्षीय रिपोर्ट का आदेश निरस्त कर जनपद स्तरीय अधिकारियों की टीम बनाकर मामले की जांच कराने, जमीन पर कब्जा दिलाने और झूठी शिकायत कर मानसिक रूप से परेशान करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई किये जाने की मांग किया है। मंगलवार को ज्ञापन सौंपने वालों में वृजेश प्रताप सिंह 'मुन्ना' सन्तोष त्रिपाठी व अन्य पदाधिकारी शामिल रहे।

## पीआरबी वाहनों पर रखी जाएगी सख्त निगरानी- एसएसपी

गोरखपुर/पीआरबी पुलिस की अब खैर नहीं अपने-अपने ड्यूटीओं पर सदैव रहे मुस्तैद पीआरबी वाहनों पर ड्यूटी करने वाले पुलिस जवान नहीं दिखाई देते संवेदनशील अब पुलिस अधीक्षक सहायक पुलिस अधीक्षक क्षेत्राधिकारी थाना प्रभारी व चौकी प्रभारी पीआरबी टीमों पर रखेंगे निगरानी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जोगिंदर कुमार ने बताया कि अमूमन देखने व सुनने को मिलता है कि पीआरवी वाहनों पर जितने पुलिस जवानों की ड्यूटीया लगाई जाती हैं वह उन वाहनों पर मौजूद नहीं रहते हैं ड्यूटी कम व्यक्तिगत कार्यों में रहते हैं मुस्तैद ऐसे लोगों पर निगरानी रख की जाएगी कार्रवाई। अभिन्न को कहीं भी किसी भी जगह चेक किया जाएगा कि इनके पास वारलेश बॉडी प्रोटेक्टर डंडा टॉर्च व वाहनों में साफ सफाई ना मिलने पर होगी कार्रवाई अमूमन देखा जाता है कि पीआरबी की टीमें घटनास्थल पर पहुंचने के बाद सही तरीके से कार्रवाईया अपना व्यवस्था बनाने के बाद नहीं करती हैं।

## रामलीला में भरत का किरदार निभाने अयोध्या पहुंचे रवि किशन शुक्ल, बोले अश्लील गाने लिखने और गाने वालों पर कराएंगे कानूनी कार्रवाई

गोरखपुर/ भोजपुरी फिल्म स्टार सदर सांसद रवि किशन शुक्ल मंगलवार को अयोध्या पहुंचे। उन्हें वहां रामलीला में भारत का किरदार निभाना है। रवि किशन ने कहा कि वह ऐसा कानून बनाने की कोशिश कर रहे हैं की जिससे भोजपुरी में अश्लील गानों पर रोक लगाई जा सके। उन्होंने बताया कि इस सिलसिले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को एक पत्र भी लिखा है। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को वह लोकसभा में भी उठाएंगे। रवि किशन ने कहा कि इसके पहले वह भोजपुरी फिल्मों के लिए अलग सेंसर बोर्ड की मांग सदन में उठा चुके हैं। यह सेंसर बोर्ड भोजपुरी फिल्मों में अश्लीलता पर अंकुश लगाएगा। भोजपुरी के नाम पर अश्लील गाने लिखने और गाने वालों पर कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि ऐसा करने वाले भोजपुरी संस्कृत को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

# अब कॉमन सर्विस सेंटर से प्राप्त करें डुप्लीकेट वोटर आईडी कार्ड

दुबौलिया। अब अगर कही आप का वोटर आईडी कार्ड गुम हो गया है तो आप को तहसील एंव निर्वाचन कार्यालय के चक्कर लगाने की जरूरत नही पड़ेगी। अब आप को अपने नजदीक सीएससी केन्द्र ( कॉमन सर्विस सेंटर) पर जा कर के मात्र ?28 रुपए में डुप्लीकेट वोटर आईडी पा सकते हैं।

सीएससी के जिला प्रबंधक राहुल सिंह वह सौरव गुप्ता ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से उक्त जानकारी दी।उन्होंने बताया कि डुप्लीकेट वोटर कार्ड के लिए आपको सीएससी केन्द्र पर जाना होगा बस अपना वोटर आईडी नंबर मालूम होना चाहिए यहां पर पहले सीएससी केन्द्र आपका 001 फॉर्म भरा जाएगा। संबंधित विधानसभा का एआरओ सत्यापन करेगा उसके बाद ?28 की फीस अदा कर आपका वोटर आईडी प्लास्टिक शीट पर प्रिंट करके मिल जाएगा। सत्यापन के बाद इस का उपयोग

लोग कर सकते है। अभी जनपद के लगभग 70 से 80 सीएससी केंद्रों पर डुप्लीकेट वोटर आईडी मिलने की सुविधा उपलब्ध हो गई है केंद्रों से मतदाता अपने नाम, उम्र पता फोटो आदि से संबंधित संशोधन भी करवा सकेंगे सभी तहसीलों एंव विधानसभा क्षेत्रों में 3 से4 या अधिक केंद्रों पर डुप्लीकेट वोटर आईडी निकाल ले जाने की अनुमति मिल चुकी है। सीएससी के जिला प्रबंधक राहुल सिंह वह सौरव गुप्ता ने बताया कि सभी सीएससी केंद्रों का पुलिस सत्यापन करने के बाद यहां वोटर आईडी की सुविधा प्रदान की गई है धीरे धीरे या सुविधा अन्य सीएससी पर भी मिलेंगी अगर आपको वोटर आईडी नंबर नहीं मालूम है तो आप सीईओ की वेबसाइट और एनवीएसपी पोर्टल पर सर्च के जरिए अपना वोटर आईडी नंबर जान सकते हैं भारत सरकार ने मतदाताओं को सरल सुविधा प्रदान करने के लिए ग्राम पंचायतों में स्थिति सीएससी केंद्रों पर भी यह सुविधा प्रदान की है जिसमें नए मतदाता भी जुड़ सकेंगे।

# विधायक ने किया सामुदायिक शौचालय भवन एवं इंटरलॉकिंग सड़क का उद्घाटन

गोरखपुर/पिपराइच विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत विकासखंड पिपराइच के ग्रामसभा उनौलादोयम में सामुदायिक शौचालय भवन एवं इंटरलॉकिंग सड़क का लोकार्पण खंड विकास अधिकारी रतन प्रकाश चौधरी की उपस्थिति में पिपराइच विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक महेंद्र पाल सिंह ने वैदिक मंत्रों उपरांत, रिबन काटकर किया।एवं जनमानस को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार लोक कल्याण हेतु निरंतर कार्य कर रही है जिसका परिणाम है कि गांव में शौचालयों की स्थिति पूर्ण होने के उपरांत प्रत्येक गांव में आम जनमानस की सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए सामुदायिक शौचालय केंद्र की स्थापना करके उत्तर प्रदेश को स्वच्छता के प्रथम पायदान पर स्थापित करने की महत्वकांक्षी योजना को अमलीजामा पहनाया जा रहा है।

रमन उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने हेतु ग्रामीण अंचल की समस्त सड़कों को डामर सीसीयू एवं इंटरलॉकिंग सड़क के माध्यम से आवागमन सुलभ बनाने हेतु निरंतर कार्य किया जा रहा है विगत 15 वर्षों से बिगड़ी हुई व्यवस्था को सुदृढ़ करने में काफी सफलता मिली है वह समय दूर नहीं है जब संपूर्ण भारत में उत्तर प्रदेश विकास के प्रथम पायदान पर स्थापित होगा।

कार्यक्रम मे विधायक प्रतिनिधि अरविंद सिंह, पूर्व प्रमुख आनंद शाही, पूर्व जिला मंत्री धर्मेंद्र सिंह सैथवार, अवर अभियंता सुनील सिंह, ग्राम प्रधान गण सुधा सिंह, संतोष कुमार सिंह, संतोष कुमार प्रजापति गंगा मौर्या, वीरेंद्र सिंह, एजाज अहमद, दीन दयाल सिंह, राम नगीना यादव, राम नगीना साहनी, संतोष चौहान, रामकेवल राजभर, नंगीना सहानी, राम दुलारे चौधरी सहित कई लोग उपस्थित थे।

# पीजीआई मे मजदूर की लाठी डंडो से पीट पीट कर चचेरे भाईयो ने कर दी हत्या

## मृतक के भाई की तहरीर पर हत्या का मुकदमा दर्ज एक हिरासत में

**लखनऊ, संवाददाता।** पीजीआई थाना क्षेत्र के हैवतमऊ मे बीती रात पुरानी रजिंश को लेकर रिश्तेदारो के बीच हुए विवाद के बाद घायल 26 वर्षीय मजदूर की इलाज के दौरान सिविल अस्पताल मे मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक के भाई द्वारा हमले के बाद लिखवाए गए मुकदमे को अब तरमीम कर मारपीट के मुकदमे को हत्या के मुकदमे मे तरमीम कर दिया। मृतक के भाई द्वारा नामजद कराए गए तीन आरोपियो मे से एक को पुलिस ने हिरासत मे ले लिया है। इन्स्पेक्टर का कहना है कि आरोपी और मृतक चचेरे भाई है। जानकारी के अनुसार पीजीआई थाना क्षेत्र के एलडीको हैवतमऊ मे अपने परिवार के साथ रहने वाला 26 वर्षीय अर्जुन रावत मजदूरी करता था। अर्जुन सोमवार की शाम अपने घर से मजदूर करने के लिए पीजीआई जा रहा था तभी हैवतमऊ के पास अर्जुन को हैवतमऊ के रहने उसके चचेरे भाई सिकन्दर, पितम्बर और दिलीप ने रोक लिया। वाद विवाद के बाद तीनो ने अर्जुन पर लात घूसो और लाठी डंडो से हमला कर उसे बुरी तरह से लहुलुहान कर दिया। रिश्तेदारो के हमले मे घायल अर्जुन को पुलिस की मदद से सिविल अस्पताल मे भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान आज उसकी मौत हो गई। सोमवार को अर्जुन को लाठी डंडो से पीट कर घायल करने वाले तीनो आरोपियो के खिलाफ अर्जुन रावत के भाई आजाद रावत ने पीजीआई थाने मे 323,504,506 के तहत मुकदमा दर्ज कराया था लेकिन क्यूकि दबंग चचेरे भाईयों के हमले मे घायल अर्जुन की मौत हो गई इस लिए कल लिखे गए मुकदमे को अब पुलिस ने हत्या के मुकदमे मे तरमीम कर दिया है। इन्स्पेक्टर पीजीआई केके मिश्रा ने बताया कि अर्जुन और सिकन्दर के बीच प्रापर्टी को लेकर पुराना विवाद चल रहा था बताया जा रहा है कि इससे पहले भी अर्जन और आरोपियो के बीच झगड़ा हो चुका है। पुलिस ने तीनो नामजद आरोपियो मे से एक दिलीप को आज हिरासत मे लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

### बुनकरों की मांगों की अनदेखी की गई तो हम आन्दोलन के लिए बाध्य होंगे:अकरम अन्सारी

**लखनऊ, संवाददाता।** मोमिन अन्सार सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मो. अकरम अन्सारी ने कहा की उत्तर प्रदेश का बुनकर बड़ी बदहाली के दौर से गुजर रहा है जहाँ कोरोना महामारी (कोविड-19) का प्रकोप है वही केंद्र व उ.प्र. सरकार द्वारा बुनकरों की अनदेखी है जो बुनकरों पर सितम ढहा रही है, कोरोना महामारी मे जहाँ सरकार द्वारा लोगो के लिये तमाम प्रयास किये जा रहे है वही पहले से ही भुखमरी की कगार पर पहुंचे बुनकर से बिजली की फ्लैट रेट की व्यवस्था को समाप्त करके बुनकरों पर जुल्म ढहा दिया है। जबकि सरकार का इस ओर ध्यान दिलाने के लिये बुनकर वक्त-वक्त पर अपनी बात कहता रहा है।

### महापौर ने 20 पिंक कूड़ा उठाने वाहनों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

**लखनऊ, संवाददाता।** आज मंगलवार को महापौर संयुक्त भटिया ने शाशन से प्राप्त कूड़ा उठाने वाले 20 पिंक वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारे यशश्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर, सशक्त और स्वावलंबी बनाये जाने हेतु मिशन शक्ति अभियान चलाया जा रहा।जिसमे हमारा नगर निगम भी सहभाग कर रहा है। महिलाओं को सशक्त करने हेतु ही आज हमारे नगर निगम द्वारा 20 पिंक वाहनों का शुभारंभ किया जा रहा है। इसका संचालन भी महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा है। यह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है। महापौर ने सभी महिला वाहन चालकों को पिंक साड़ियां भी भेंट की, इस अवसर पर महापौर संग पार्षद कौशलेन्द्र द्विवेदी, नगर आयुक्त अजय द्विवेदी, अपर नगर आयुक्त अमित कुमार, अपर नगर आयुक्त अर्चना द्विवेदी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

### पूर्व आईएएस सूर्य प्रताप सिंह पर एफआईआर पूरी तरह गलत

**लखनऊ, संवाददाता।** एक्टिविस्ट डॉ नूतन ठाकुर ने कासगंज के अमांपुर थाने में पूर्व आईएएस अफसर सूर्य प्रताप सिंह के खिलाफदर्ज किया गए एफआईआर को पूरी तरह गलत बताते हुए इसकी विवेचना कासगंज जिले से अलग किसी वरिष्ठ पुलिस अफसर से कराये जाने की मांग की है। डीजीपी एच सी अवस्थी को भेजे अपने पत्र में नूतन ने कहा कि वादी परमेन्द्र सिंह, उपनिरीक्षक द्वारा दर्ज एफआईआर में श्री सिंह पर एक पुरानी रेप की घटना को ट्वीट करने का आरोप लगाया गया है, जिसपर कार्यवाही हो चुकी है। नूतन ने कहा कि मात्र पुरानी घटना को ट्वीट करने से किसी व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं किया जा सकता है. उन्होंने कहा कि इस मामले में लगाये गए धारा 153ए आईपीसी तथा 67ए आईटी एक्ट पूरी तरह गलत हैं. सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि मात्र सम्भावना के आधार पर धारा 153ए नहीं लगाया जा सकता है. इसी प्रकार धारा 67ए आईटी एक्ट का संबंध अश्लीलता के मामलों से है, जिसका यहाँ कोई मतलब नहीं है। एसपी कासगंज द्वारा अपने स्तर से एफआईआर दर्ज कराये जाने की बात चर्चा में होने के आधार पर उन्होंने मामले की जाँच कासगंज जिले से बाहर से कराये जाने की मांग की है।

### विभागीय कार्यवाही अनावश्यक लंबित रखने पर लोकायुक्त परिवाद

**लखनऊ, संवाददाता।** आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर ने अपने खिलाफलम्बे समय से लंबित विभागीय कार्यवाहियों के संबंध में आज लोकायुक्त जस्टिस संजय मिश्रा के समक्ष परिवाद दायर किया है, अपने परिवाद में अमिताभ ने कहा कि उनके खिलाफ 2015-16 में 4 विभागीय कार्यवाहियां शुरू की गयीं. इन सभी विभागीय कार्यवाही में उनके द्वारा हर स्तर पर पूरा सहयोग किया गया, इसके बाद भी मात्र शासन के स्तर पर की गयी भारी लापरवाही के कारण ये सभी विभागीय कार्यवाही आज तक लंबित हैं,उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय सेवाएँ दंड एवं अपील नियमावली के नियम 8 में विभागीय कार्यवाही के 06 माह में समाप्त करने का प्रावधान है. इसी तरह गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिशानिर्देश के अनुसार भी यदि किसी आईपीएस अफसर के लंबित विभागीय कार्यवाही के कारण उसका प्रोमोशन रुका हुआ है तो उसकी हर 3 माह में समीक्षा की जाएगी,अमिताभ ने कहा कि शासन ने इन सभी नियमों का खुलेआम उल्लंघन करते हुए इन जांचों को लंबित रखा है, जिसके कारण आज उनसे कई बैच जूनियर अफसर भी एडीजी बन गए हैं और वे आईजी पद पर ही तैनात हैं, अतः उन्होंने लोकायुक्त से इस अनुचित विलंब के लिए दोषी अफसरों के खिलाफकार्यवाही की प्रार्थना की है।

### योगी की महत्वाकांक्षी योजना मिशन शक्ति का प्रचार करेंगे जादूगर राकेश श्रीवास्तव

**लखनऊ, संवाददाता।** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तमाम सख्तियों के बावजूद प्रदेश में महिलाओं पर जुल्म और अपराध का सितम बरकरार है। ऐसे में सीएम ने नवरात्र के अवसर पर महात्वाकांक्षी मिशन शक्ति लांच की है। जिससे अपराधियों की खैर नहीं रहेगी। बता दें कि मिशन का प्रचार अभियान आज जनपद लखनऊ से मशहूर जादूगर राकेश श्रीवास्तव ने जादू कार्यक्रम के द्वारा बख्शी का तालाब से शुरुआत की है। जादूगर राकेश ने विधायक अविनाश त्रिवेदी से जादुई छड़ी घुमाकर मिशन शक्ति का बैनर निकाला उसके बाद एक से बढ़कर एक हैरतअंगेज कारनामे दिखाकर लोगों को महिला सम्मान व स्वालम्बन के लिए प्रेरित किया।

### हिन्दू महासभा जिला लखनऊ के अध्यक्ष बने बृजेश शुक्ला

**लखनऊ, संवाददाता।** अखिल भारत हिन्दू महासभा, उत्तर प्रदेश की जिला इकाई के नये अध्यक्ष बृजेश शुक्ला को चुना गया है। यहां पार्टी के प्रदेश कैम्प कार्यालय, त्रिवेदी टॉवर, इंटीग्रल यूनिवर्सिटी के सामने कुर्सी रोड पर जिला इकाई की हुयी बैठक में बृजेश शुक्ला को जिला लखनऊ का सर्वसम्मति से चुनाव किया गया। प्रदेश महामंत्री सिद्धार्थ दुबे की देखरेख में हुये जिला इकाई के चुनाव में अध्यक्ष पद के लिये एकमात्र बृजेश शुक्ला ने नामांकन भरा। जिनके समक्ष अन्य कोई प्रत्याशी न होने पर उन्हें निर्विरोध जिला अध्यक्ष घोषित कर दिया गया। जिला इकाई की इस बैठक में प्रदेश अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी, प्रदेश उपाध्यक्ष शिव पूजन दीक्षित, मीडिया प्रभारी विवेक शर्मा सहित जिला इकाई से जुड़े मुकेश कुमार सोनी, दीन दयाल वर्मा, दीपक गुप्ता, अजय त्रिपाठी, सुभाश चन्द्र पाण्डेय सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

# विधानसभा उपचुनावों के लिए सपा के स्टार प्रचारकों की सूची जारी

**लखनऊ, संवाददाता।** जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के सेक्शन 77 के प्राविधानों के अंतर्गत प्रदेश में होने वाले 07 विधानसभा उपचुनावों के लिए समाजवादी पार्टी के स्टार प्रचारकों की सूची आज घोषित कर दी गई। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो0 रामगोपाल यादव जी के हस्ताक्षरों से जारी प्रचारकों की सूची में पार्टी संरक्षक मुलायम सिंह यादव, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरनमय नन्दा और राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो0 रामगोपाल यादव, राष्ट्रीय महासचिव मोहम्मद आजम खां एवं इन्द्रजीत सरोज, नेता प्रतिपक्ष विधानसभा रामगोविन्द चौधरी तथा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के नाम प्रमुख हैं। समाजवादी पार्टी के प्रचारकों में माता प्रसाद पाण्डेय पूर्व विधानसभाध्यक्ष, धर्मेन्द्र यादव पूर्व सांसद, महबूब अली, शैलेन्द्र यादव ललई, संजय गर्ग, जगदीश सोनकर एवं इकबाल महमूद विधायकगण, शाहिद मंजूर, कमाल अख्तर, रामआसरे विश्वकर्मा पूर्व मंत्रीगण, जावेद अली खां सांसद राज्यसभा, राज नारायन बिन्द पूर्व विधायक सहित सर्वश्री रामसुन्दर दास निषाद, सुनील यादव, लीलावती कुशवाहा, डॉ0 राजपाल कश्यप सभी सदस्य विधान परिषद तथा श्यामलाल पाल एवं जुगल किशोर बाल्मीकि पूर्व प्रदेश सचिव के नाम भी शामिल हैं। समाजवादी पार्टी के युवा प्रकोष्ठों के प्रदेश अध्यक्षों में अरविन्द गिरि समाजवादी युवजन सभा, दिग्विजय सिंह देव समाजवादी छात्र सभा, अनीस राजा यूथ ब्रिगेड तथा डॉ0 राम करन निर्मल समाजवादी लोहिया वाहिनी को भी विधानसभा उपचुनाव के क्षेत्रों में प्रचार का जिम्मा सौंपा गया है।

### बालिकाओं, महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित किया

**लखनऊ, संवाददाता।** प्रदेश में उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चल रहे मिशन शक्ति योजना की निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार सम्पूर्ण प्रदेश के विश्वविद्यालयो राजकीय महाविद्यालयों, अशासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों द्वारा शासन की मंशा के अनुरूप छात्र, छात्राओं एवं अभिभावको को साथ लेकर चल रहे क्रियाकलापों का प्रवाह जारी रहा। इन क्रियाकलापो के अन्तर्गत बालिकाओं की प्रतिरोधक क्षमता के संवर्द्धन हेतु ऑनलाइन व्याख्यानमालाओं, निबंध, स्लोगन, पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं बालिकाओं की सुरक्षा हेतु ऑनलाइन आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रमुख रहे। दैनिक रूप से छात्र, छात्राओं व अभिभावकों द्वारा महिलाओं के सम्मान एवं सुरक्षा हेतु ली जाने वाली शपथ का कार्यक्रम भी पूर्व दिवसों की भाँति सम्पन्न हुआ, जिसमें पुत्र व पुत्री के मध्य भेद न करते हुए, संतानो को नैतिक मूल्यों से सम्पृक्त व अनुशासित करने की प्रतिज्ञा ली गयी।

# योगीराज में संस्थागत उत्पीड़न झेल रहा दलित-पिछड़ा समाजः अजय कुमार लल्लू

**लखनऊ, संवाददाता।** उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस अनुसूचित जाति के चेयरमैन अलोक प्रसाद की अलोकतांत्रिक गिरफ्तारी और प्रदेश की योगी सरकार की चौतरफा फेल होने से उपजी हताशा के चलते उत्पीड़न पर आवाज उठाने वाली कांग्रेसजन की आवाज को हर संभव तरीके से दबाने से कृत्य की कड़ी आलोचना करते हुए योगी सरकार को दलित-पिछड़ा विरोधी करार दिया। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने आज मुख्यालय में आहूत एक प्रेस कांफ्रेंस में मौजूदा योगी सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए योगी सरकार को दलित-पिछड़ा विरोधी मानसिकता वाली सरकार करार दिया। अजय कुमार लल्लू ने कहा कि आज कांग्रेस ही हर मोर्चे पर फेल योगी सरकार की नाकामियों और उत्पीड़न पर आवाज बुलंद कर रही है जिसके चलते राजनैतिक द्वेष और वैमनस्यतापूर्ण कार्यवाही करते हुए योगी सरकार ने कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के चेयरमैन अलोक प्रसाद को फर्जी मुकदमे लाद कर जेल में डालने का कम किया है। प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने आगे कहा कि आये दिन लोग सत्ता प्रतिष्ठान लोक भवन के आगे आत्मदाह को अभिशप्त है क्योंकि योगी सरकार लोगो को न्याय दिलाने में पूरी तरह नाकाम साबित हुयी है। उन्होंने योगी सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि आज के समय में दलित-पिछड़ा उत्पीड़न को योगी सरकार का प्रत्यक्ष संस्थागत वरदहस्त प्राप्त है। चेयरमैन अलोक प्रसाद की गिरफ्तारी अलोकतांत्रिक ही नहीं वरन दलित-पिछड़े समाज के उत्पीड़न की सोची समझी रणनीत का हिस्सा है। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए वरिष्ट कांग्रेस नेता व पूर्व मंत्री आर के चौधरी ने कहा कि उत्तर प्रदेश विधान भवन के सामने इन दिनों आत्मदाह करने वालों की भीड़ लगी हुयी है।

# कुंवर आसिफ अली संजू मियां डिग्री कॉलेज में चलाया गया मिशन शक्ति जागरूकता अभियान

**रुद्र प्रताप सिंह।** उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उठाया गया सराहनीय कदम महिलाओं की ओर मिशन शक्ति के तहत नारी सम्मान महिलाओं को सुरक्षा मुहैया करायेगी उत्तर प्रदेश पुलिस अब हर चौराहे पर होगी पुलिस की पैनी नजर पुलिस के चुंगल से अब नहीं बच पाएंगे मनचले शोहदे अब हर पीड़िता को मिलेगा सच्चाई के साथ इंसाफ मिशन शक्ति के तहत नारी सुरक्षा नारी सम्मान ग्रामीण थाना मलिहाबाद प्रभारी निरीक्षक चिरंजीव मोहन के नेतृत्व में मिशन शक्ति की बैठक का आयोजन ग्राम पंचायत गढ़ी जिन्दौर के कुंवर आसिफ अली संजू मियां डिग्री कॉलेज में बैठक संपन्न हुई जिसमे छात्राओं के साथ मिशन शक्ति के तहत प्रशासन द्वारा जानकारियां दी गई जिसमें महिलाएं को सुरक्षा के बारे में जानकारियां बताई गई छात्राओं ने अपनी बातों को भी प्रशासन के समक्ष रखा प्रशासन महिलाओं की सुरक्षा के लिए मिशन शक्ति नारी सम्मान के तहत 24 घंटे सेवा में सदैव तत्पर हैं जो मिशन

शक्ति के तहत सीयूजी नंबर 181,112 ,1098 ,1090 जैसे न। आवंटित किए गए हैं उन नंबरों पर कॉल करके महिलाएं अपनी समस्या बता सकती और अपने थाना क्षेत्र के सीयूजी नंबर पर भी कॉल कर सकती हैं थाना प्रभारी द्वारा स्पष्ट दिशा निर्देश दिए गए हैं कि महिलाओं के साथ जो भी अभद्र व्यवहार व छेड़छाड़ जैसी अन्य घटनाएं करेगा और जो दोषी पाया जाएगा उसके समक्ष प्रशासन द्वारा कठोर कार्रवाई की जाएगी और महिलाओं से गुजारिश है कि अपनी बहू बेटियों को अपने संस्कारों के बारे में भी जानकारी दें ताकि वह किसी मनचले लड़को के बहकावे में ना आएं और अकेले सुनसान जगहों पर पर जाने से बचें अगर कोई ऐसी घटना घटती है तो वह तुरंत सीयूजी नंबर पर सूचना दें ताकि मिशन शक्ति के तहत आपको तुरंत सुरक्षा मुहैया कराई जाएगी जिसमे मलिहाबाद थाना प्रभारी चिरंजीव मोहन रहीमाबाद चौकी प्रभारी द्वारिका प्रसाद प्रजापति उपनिरीक्षक राजमणि पाल उपनिरीक्षक कुलदीप सिंह हेड कांस्टेबल तेजभान सिंह कांस्टेबल गिरजा शंकर पंकज अश्वनी कुमार महिला कांस्टेबल पूर्व प्रधान हारुन आसिफ उमैर आसिफ सतीश पंडित पत्रकार जितेन्द्र सिंह व क्षेत्र के अन्य सम्मानित लोगों की उपस्थिति रही।

### धान खरीद में हो रही अनियमितता एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ कांग्रेस का कल विरोध प्रदर्शन

**लखनऊ, संवाददाता।** उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने कहा कि किसान अपने धान को को बेचने के लिए मारा-मारा फिर रहा है और सरकार उनकी तरफ आँख बंद कर के बैठी है। तमाम दावों के बाबजूद प्रदेश में अभी भी धान क्रय केंद्र नहीं खुल पाए है, जो थोड़े बहुत खुले है वहां पर धान किसानो के साथ नमी के नाम पर भारी कटौती कर उनका शोषण करने के साथ बिचौलियों के हाथों औने पौने दामो पर बेचने पर मजबूर किया जा रहा है। इसके खिलाफ कांग्रेस सभी जनपदों में 22 अक्टूबर को जिला मुख्यालयों पर व्यापक विरोध प्रदर्शन करेगी। न्यूनतम समर्थन मूल्य 1886 रुपये प्रति क्विंटल की घोषणा करने वाली भाजपा सरकार किसानो से 1100-1200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीद रही है, इसके लिए धान में नमी आदि अनेक कारणों से धान को गुणवत्ताहीन बता कर कटौती कर रही है। सरकार की इस किसान विरोधी नीति के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा ने 2017 के अपने चुनावी घोषणा पत्र में गन्ना किसानों से 14 दिन में पूर्ण भुगतान करने का वादा किया था और ऐसा न होने पर बकाये पर ब्याज देने की भी घोषणा की थी किन्तु सरकार के साढ़े तीन साल बीत जाने के बाद भी यह वादा अन्य वादों की तरह जुमला ही साबित हुआ। गन्ना किसानों का लगभग 14 हजार करोड़ रुपये अभी भी बकाया है। सरकार अपने वादे के मुताबिक गन्ना किसानो को तत्काल बकाया भुगतान सुनिश्चित करवाए। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने विगत माह में किसानों के निजी नलकूपों के बिजली की कीमत में की गयी बढ़ोत्तरी का भी विरोध करते हुए बढ़ी हुई कीमतों को अविलम्ब वापस लेने की मांग की है। उन्होंने कहा कि निजी नलकूपों की पांच, 7.5 और 10 हार्स पॉवर के कनेक्शन की श्रेणी को समाप्त कर सभी नलकूपों को साढ़े बारह हार्स पॉवर के कनेक्शन की कीमत की अनिवार्यता आर्थिक रूप से तंगहाल किसानों के ऊपर बड़ा आर्थिक हमला है। उन्होंने कहा कि किसानों की जोत निरंतर घटती जा रही है।

# संगठन द्वारा आयोजित किया गया शपथ ग्रहण समारोह

**रुद्र प्रताप सिंह।** मलिहाबाद लखनऊ के क्षेत्र में ग्राम पंचायत गौंदा मुअज्जम नगर में अखिल भारतीय सनातन धर्म प्रचार मानव सेवा संस्थान संगठन द्वारा चलाया गया शपथ ग्रहण समारोह जिसमें संगठन के तमाम पदाधिकारी सम्मिलित रहे जिसमें जिला कार्यकारिणी सदस्य तहसील व ब्लाक स्तर के कार्यकर्ता उपस्थित रहे मुख्य अतिथि के रूप में माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री भानु प्रकाश तिवारी शास्त्री जी की उपस्थिति में शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम संपन्न हुआ संगठन को अपार मजबूती प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है वास्तव में आज का दिन हम सभी पदाधिकारी गणों एवं सदस्यों के लिए ऐतिहासिक दिन के समान रहा और सभी लोग भगवान भोलेनाथ के दरबार में शपथ ग्रहण विधि-विधान पूर्वक तरीके से किया जिसमें समस्त कार्यकर्ताओं को धर्म के प्रति लोगों को जागरूक करने तथा प्रमुख रूप से उन हिंदुओं को जगाना है जो अपने धर्म को भूल बैठे हैं हमारा संकल्प है कि हम हिंदुत्व के मार्ग पर चलकर अपने धर्म की रक्षा करें और लोगों को सनातन धर्म के प्रति जागरूक करें जिससे भविष्य में हमारे सनातन धर्म को लोग आगे आकर प्रचार-प्रसार का बढ़ावा दें सदैव सत्य के पथ पर चलकर आवश्यक लोगों की सेवा का बीड़ा उठाएं पीड़ित लोगों की सहायता करें और संगठन को अपार ऊंचाइयों तक ले जाएं ताकि संगठन से जुड़े लोगों को एक नई दिशा मिल सके और संगठन से जुड़े कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में संगठन की रूपरेखा तय की गई।

### कोविड-19 से उत्तर प्रदेश में 29 और मरीजों की मौत, संक्रमण के 2,503 नए मामले

**लखनऊ, संवाददाता।** उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान कोविड-19 से संक्रमित 29 और लोगों की मौत हो गई तथा 2,503 लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई। स्वास्थ्य विभाग की ओर से मंगलवार को जारी रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 24 घंटे के दौरान राज्य में कोविड-19 के 29 और मरीजों की मौत हो गई। इसके साथ ही राज्य में इस संक्रमण से मरने वालों की कुल संख्या बढ़कर 6,658 हो गई है। लखनऊ में सबसे ज्यादा सात मरीजों की मौत हुई है। इसके अलावा कानपुर नगर, वाराणसी, मेरठ और हापुड़ में दो-दो तथा गौतम बुद्ध नगर, बरेली, अयोध्या, बाराबंकी, लखीमपुर खीरी, इटावा, प्रतापगढ़, उन्नाव, चंदौली, रायबरेली, मैनपुरी, फिरोजाबाद, बांदा और भदोही में कोविड-19 संक्रमित एक-एक व्यक्ति की मौत हो गई। पिछले 24 घंटे के दौरान राज्य में 2,503 लोगों में कोविड-19 संक्रमण की पुष्टि हुई है। लखनऊ में सबसे ज्यादा 293 नए मरीजों का पता लगा है।

# देवरिया में किसी ने वापस नही लिया नाम, 14 प्रत्याशी मैदान में

### चुनाव चिन्ह पाकर खिले प्रत्याशियों के चेहरें

**लखनऊ, संवाददाता।** देवरिया में हो रहे विधानसभा उपचुनाव में निर्दलीय प्रत्यिशियों को जब उनको चुनाव चिन्ह गुब्बारा, बल्ला, क्रेन मिला तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। विधानसभा उपचुनाव में निर्धारित नाम वापसी के दिन किसी भी उम्मीदवार ने अपना नामांकन पत्र वापस नही लिया। अब इस उपचुनाव में 14 प्रत्याशी मैदान में हैं जिसमें पांच मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य राजनैतिक दलों के तथा पांच भिन्न रजिस्ट्रीकृत राजनैतिक दलों और चार निर्दलीय प्रत्याशी शामिल है। निर्वाचन आयोग द्वारा नाम वापसी हेतु निर्धारित दिन चुनाव चिन्ह आवंटित किया गया। रजिस्ट्रीकृत राजनैतिक दलों के अभ्यर्थियों में पंडित उमेश मणि त्रिपाठी मनुवादी पार्टी को ट्रेक्टर चलाता किसान, ऋषिकेश मौलिक अधिकार पार्टी को सिलाई मशीन, ओम प्रकाश राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी-गैस सिलिन्डर, भारतीय सर्वजन पार्टी के प्रत्याशी मुनीव को आदमी व पाल युक्त नौका तथा मोडरेट पार्टी के उम्मीदवार राजू को आटो रिक्शा चुनाव चिन्ह रिटर्निंग आफिसर सौरभ सिंह द्वारा आवंटित किया गया। निर्दल प्रत्याशी अजय प्रताप सिंह उर्फ पिन्टू सिंह को बल्ला, अतिउल्लाह को क्रेन, राजन यादव उर्फ अर्थी बाबा को गुब्बारा तथा उम्मीदवार सुधाकर को एयर कंडिशनर चुनाव चिन्ह आवंटित हुआ। राष्ट्रीय और राजनैतिक दलों के प्रत्याशी अभयनाथ त्रिपाठी बसपा का चुनाव चिन्ह हाथी, अशोक यादव नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी- घडी, ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी समाजवादी पार्टी-साइकिल, मुकुन्द भाष्कर मणि इंडियन नेशनल कांग्रेस-हाथ का पंजा एवं डॉ. सत्य प्रकाश मणि त्रिपाठी उर्फ गुड्डू बाबू प्रत्याशी भाजपा को कमल का फुल आयोग द्वारा निर्धारित चुनाव चिन्ह आवंटित किया गया।

### हाथरस कांड में गैंगरेप मामले में इलाज करने वाले डॉक्टर व सीएमओ निलंबित

**लखनऊ, संवाददाता।** हाथरस गैंगरेप मामले में बिटिया का इलाज करने वाले जे.एन. मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर व सीएमओ पर बड़ी कार्रवाई की गई है। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर ने डॉक्टर व सीएमओ को निलंबित कर दिया है। खास बात ये है कि दोनों को सस्पेंड करने का फैसला सीबीआई टीम की जांच के बाद लिया गया है। बता दें कि बीते दिनों जांच के लिए सीबीआई मेडिकल कॉलेज पहुंची थी। मिल रही जानकारी के मुताबिक डॉक्टर व सीएमओ के निलंबन के बाद मेडिकल कॉलेज में बड़ा आंदोलन हो सकता है। जिसकी वजह से कोरोना काल में मेडिकल कॉलेज की स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा सकती है।

# उत्तर प्रदेश में भाजपा राज में जनता बुरी तरह त्रस्तः अखिलेश यादव

**लखनऊ, संवाददाता।** समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा राज में जनता बुरी तरह त्रस्त है। कमजोरो पर भाजपा सरकार की दहशतगर्दी इतनी बढ़ी हुई है कि लोग विधान भवन के सामने ही आत्मदाह करने को मजबूर हो रहे हैं। विधान भवन और लोक भवन आमने-सामने हैं जहां मुख्यमंत्री सहित उनका मंत्रिमण्डल और मुख्यसचिव सहित सभी शीर्ष विभागीय अधिकारी बैठते हैं। इस सबके बावजूद प्रदेश का विकास ठप्प है। जनता मंहगाई, बेकारी, लूट, हत्या, अपहरण से डरी और सहमी है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि महिलाओं और बच्चियों को आए दिन छेड़छाड़ और दुष्कर्म का शिकार होना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री जी ने मान लिया है कि प्रदेश में उनकी सरकार के दिन गिने-चुने रह गए हैं।

हर मोर्चे पर विफलता के नाते वे आगामी आम चुनाव में टिक नहीं पाएंगे इसलिए इन दिनों वे बिहार में चुनाव प्रचार में लग गए हैं। न यहां रहेंगे, न जनता की चीख पुकार सुनाई देगी। जिलों में कहीं सुनवाई न होने, न्याय न मिलने से परेशान लोगों को आत्मदाह के अलावा दूसरा रास्ता नहीं सूझता है। कमजोरों पर सरकार का अत्याचार बढ़ता जा रहा है। दलितों पर अत्याचार के मामले सभी हदें पार कर गए हैं। बाराबंकी में दुकान पर कब्जे और लखनऊ में मकान मालिक के उत्पीड़न से क्षुब्ध लोगों ने कल आत्मदाह का रास्ता अपनाया। महाराजगंज से आई एक महिला ने भी खुद को आग लगा ली थी। प्रदेश के सर्वाधिक सुरक्षित क्षेत्र में आत्मदाह की घटनाएं सरकार के संवेदनहीन एवं अमानवीय होने का प्रमाण है। वस्तुतः भाजपा के पास कोई योजना नहीं होने से इसका नेतृत्व हताशा में डूब गया है। मुख्यमंत्री जी ने यह फार्मूला अपना रखा है 'जनता के नाम जो समाजवादी पार्टी का काम, बस उसे कर लेना है अपने नाम।' समाजवादी सरकार ने कैंसर अस्पताल बनवाया, चार साल होने को है भाजपा सरकार सोई रही। अब जब बिदाई की बेला आ गई है तो मुख्यमंत्री जी और रक्षामंत्री जी, जो लखनऊ के सांसद भी हैं, समाजवादी सरकार के काम पर अपने नाम का पत्थर लगवा रहे है। जनता की याददाश्त इतनी खराब नही कि वह साढ़े तीन साल में ही कैंसर अस्पताल के निर्माणकर्ता का नाम भूल जाए।सुपर स्पेशियलिटी कैंसर इंस्टीट्यूट ऐण्ड हास्पिटल का लोकार्पण वास्तव में समाजवादी सरकार के समय हो चुका था अब उसी का पुनः लोकार्पण भाजपा सरकार में करने की क्या आवश्यकता है?

### नबी पाक पूरी मानवता के लिए तोहफाः मो0 मुश्ताक

**लखनऊ, संवाददाता।** इस्लामिक सेन्टर आफ इण्डिया फरंगी महल के अर्न्तगत दारूल उलूम निजामिया फरंगी महल की जामा मस्जिद ईदगाह लखनऊ में 12 दिवसीय ''जलसा सीरतुन्नबी स0 व सीरत-ए-सहाबा रजि और तहफ्फुजे शरीअत'' के जलसे आन लाइन आयोजित किये जा रहे है। कोविड-19 के प्रोटोकाल को देखते हुए किसी भी प्रकार की भीड़ को जमा न करने की वजह से 12 दिवसीय जलसे आन लाइन ही रिले किये जायेंगे। जलसे का आरम्भ कारी मुहम्मद हारून की तिलावत कलाम पाक से हुआ। नात पाक दारूल उलूम फरंगी महल के विद्यार्थी अब्दुल्लाह ने पेश किया। इस अवसर पर ऑल इण्डिया सुन्नी बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना मो0 मुश्ताक ने अपने सम्बोधन में कहा कि दुनिया के सारे धर्मो की यही शिक्षा रही है कि सच बोलना अच्छा है और झूट बोलना बुरा है। इंसाफ भलाई और जुल्म बुराई है। इस्लाम में इबादत और दूसरे आदेशों को जो महत्व प्राप्त है उससे कम अखलाक का महत्व उसकी निगाह में नही है। उन्होंने कहा कि दुनिया की सारी खुशहाली अमन व ईमान इसी अखलाक की दौलत है।

# जीएसटी पर केंद्र और राज्यों में रार

केंद्र और राज्यों के बीच आम सहमति बनाते हुए, उनके लगभग सभी अप्रत्यक्ष करों को एक कर में समाहित कर जुलाई 2017 से जीएसटी लागू किया गया. जीएसटी लागू होने के बाद से ही इस कर से होनेवाले संपूर्ण राजस्व के दो बराबर हिस्से होते हैं, जिसमें एक हिस्सा केंद्र और दूसरा राज्यों के पास जाता है. वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर केंद्र के सभी करों में राज्यों का हिस्सा निश्चित होता है. वर्तमान में यह हिस्सा 42 प्रतिशत है. यानी जीएसटी की कुल प्राप्तियों में से 71 प्रतिशत हिस्सा राज्यों के पास जाता है. जिस समय जीएसटी प्रणाली लागू की गयी थी, राज्यों को अपने राजस्व घटने की चिंता थी. इसलिए कई राज्य जीएसटी लागू होने का विरोध कर रहे थे.

ऐसे में तत्कालीन वित्तमंत्री अरुण जेटली ने एक फॉर्मूला लागू किया. जिसके अनुसार, राज्यों को करों से जो आमदनी होती है, उसके आधार पर न केवल जीएसटी में राज्यों के हिस्से को सुनिश्चित किया जायेगा, बल्कि उनमें प्रतिवर्ष 14 प्रतिशत की वृद्धि की भी गारंटी होगी. ऐसी व्यवस्था पांच वर्ष तक चलेगी. केंद्र सरकार का मानना था कि जीएसटी एक महत्वपूर्ण कर सुधार है।

और इससे न केवल कर एकत्रीकरण में कुशलता बढ़ेगी, बल्कि करों की चोरी भी रुकेगी. करों के कारण बिना वजह कीमत बढ़ने (कासकेडिंग इफेक्ट) जैसी स्थिति भी समाप्त होगी. यानी, कर राजस्व बढ़ने के साथ ही वस्तुओं की कीमतें भी घटेंगी. हालांकि जीएसटी को व्यवस्थित होते हुए थोड़ा समय लगा.सरकार की अपेक्षा थी कि जीएसटी से हर महीने कुल प्राप्ति कम से कम एक लाख करोड़ रुपये होगी, जबकि दिसंबर 2019 तक यानी जीएसटी के 30 महीनों में सिर्फ नौ महीनों में ही एक लाख करोड़ या उससे ज्यादा की जीएसटी प्राप्त हुई. इस वजह से खासतौर पर वर्ष 2019 में, राज्यों की भरपाई के कारण केंद्र पर बोझ बढ़ गया. जीएसटी पर एक 'सेस' लगाकर केंद्र ने राज्यों के नुकसान की भरपाई का निश्चय किया. वर्ष 2017-18 में यह भरपाई 41,146 करोड़ और 2018-19 में 69,275 करोड़ रही. वर्ष 2019-20 में हालांकि जीएसटी की औसतन प्राप्तियां लगभग एक लाख करोड़ रहीं, लेकिन राज्यों के राजस्व की भरपाई की अपेक्षा पिछले साल से भी ज्यादा हो गयी. पिछले वर्ष का बकाया अभी बाकी ही था कि नये वित्त वर्ष 2020-21 के पहले ही माह से जीएसटी प्राप्तियां कोविड-19 महामारी के चलते नीचे जाने लगीं. अप्रैल में जीएसटी की कुल प्राप्ति 32,172 करोड़, मई में 62,152 करोड़, जून में 90,917 करोड़, जुलाई में 87,422 करोड़, अगस्त में 86,449 करोड़ और सितंबर में 95,480 करोड रुपये रही. लेकिन केंद्र के वचन के अनुसार, राजस्व के नुकसान के बावजूद केंद्र पर राज्यों की भरपाई करने का दायित्व बना हुआ है. चूंकि केंद्र के पास भी राजस्व घटा है, ऐसे में वह भरपाई करने में स्वयं को असमर्थ पा रही है. इन्हीं परिस्थितियों में इसी 12 अक्तूबर को जीएसटी काउंसिल की बैठक संपन्न हुई, लेकिन इसका मतैक्य के साथ समाधान नहीं हो सका. गौरतलब है कि चालू वित्त वर्ष में 2.35 लाख करोड़ के राजस्व की कमी रहेगी. केंद्र ने राज्यों को सुझाव दिया है कि वे इस कमी को पूरा करने के लिए उधार लेना शुरू करें, लेकिन सभी राज्यों में इस बाबत सहमति नहीं बन पायी है. केंद्र सरकार ने राज्यों को दो विकल्प दिये हैं. एक, राज्य राजस्व के नुकसान की भरपाई के लिए 1.1 लाख करोड़ का उधार लेंगे और उसके मूल और ब्याज दोनों की अदायगी भविष्य में विलासिता वस्तुओं एवं अवगुण वाली वस्तुओं पर लगाये जानेवाले क्षतिपूर्ति 'सेस' से की जायेगी. दूसरा, राज्य पूरे का पूरा नुकसान 2.35 लाख करोड़ का उधार लेंगे।

लेकिन उस परिस्थिति में मूल की अदायगी क्षतिपूर्ति 'सेस' से की जायेगी, लेकिन ब्याज के बड़े हिस्से की अदायगी उन्हें स्वयं करनी होगी. वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि अधिकांश राज्य उधार लेने की प्रक्रिया आरंभ करने को तैयार हैं. केंद्र सरकार का कहना है कि यदि कोई राज्य उधार की प्रक्रिया शुरू करना चाहे तो न ही केंद्र सरकार और न ही जीएसटी काउंसिल उसे रोक सकती है. जीएसटी काउंसिल की मानें तो जिन 21 राज्यों में भाजपा अथवा उनके गठबंधन की सरकारें हैं, वे 1.1 लाख करोड़ के ऋण विकल्प को स्वीकार करने को तैयार हैं. जबकि शेष 10 राज्यों ने इसे खारिज कर दिया है. इन 10 राज्यों के वित्त मंत्रियों का तर्क है कि इस प्रकार से उधार का विकल्प गैरकानूनी है, क्योंकि इससे राजस्व की भरपाई पांच वर्ष से आगे खिसक जायेगी, जो जीएसटी एक्ट के खिलाफ है. वर्तमान में जब सभी प्रकार के राजस्व कम हो रहे हैं और केंद्र सरकार का राजस्व भी न्यूनतम स्तर पर पहुंच चुका है, ऐसे में केंद्र से यह उम्मीद करना कि राज्यों के राजस्व की क्षतिपूर्ति तुरंत हो सकेगी, सही नहीं होगा. पूर्व में भी राज्यों के जीएसटी के हिस्से की क्षतिपूर्ति 'सेस' के माध्यम से ही होती रही है. इस बार भी ऐसा करने में राज्यों को कोई नुकसान नहीं होगा. केंद्र और राज्यों के बीच बढ़ती असहमति के बीच, केंद्र सरकार ने एक घोषणा की है, जिसके अनुसार राज्यों को 12 हजार करोड़ रुपये का बिना ब्याज का 50 वर्षीय ऋण उपलब्ध कराया गया है. जिसका उपयोग वे अपने राज्यों में पूंजीगत व्यय बढ़ाने के लिए कर सकते हैं. लॉकडाउन और अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रतिकूल प्रभाव के कारण उत्पन्न स्थितियों का सभी को मिलकर सामना करना होगा।

# सम्पादकीय

# चिंताजनक शहरी बाढ़

में भारी बारिश के अनुमान को देखते हुए आशंका है कि शहर का संकट अभी टला नहीं है. इसमें कोई दो राय नहीं है कि बहुत अधिक बारिश की वजह से बाढ़ की समस्या पैदा हुई है, लेकिन यह एक कारण ही है. हैदराबाद हो या फिर ऐसी औचक बाढ़ से त्रस्त होनेवाले दूसरे शहर हों, इस परेशानी की असली वजह शहरी प्रबंधन की लचर व्यवस्था है. मुंबई, बंगलुरु और गुरुग्राम की हालिया बाढ़ों या कुछ साल पहले पानी में डूबे चेन्नई और पटना की तस्वीरों को याद करें, हर जगह जल-जमाव के एक जैसे कारण ही सामने आते हैं. अंधाधुंध और लापरवाह शहरीकरण तथा नगर निगमों एवं सरकारों के हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के चलते सामान्य से अधिक बरसात से जन-जीवन ठप पड़ जाता है. शासन और लोग बस यही उम्मीद करते हैं कि बारिश थमे और धीरे-धीरे पानी निकल जाए. यह चुनौती कितनी गंभीर है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि समुद्र तल से पर्याप्त ऊंचाई और पहाड़ी क्षेत्र में बसे श्रीनगर में भी कुछ वर्ष पूर्व जल-प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी. जानकार इस बात पर एकमत हैं कि स्थानीय निकायों के भ्रष्टाचार और निष्क्रियता के कारण कचरे का निबटारा ठीक से नहीं हो पाता है. चारों तरफ बिखरा कूड़ा बीमारियों और प्रदूषण का कारण तो बनता ही है, नालियों में जमा होकर यह पानी की निकासी को भी बाधित करता है. ऐसे में बारिश का पानी सड़कों और गलियों में जमा हो जाता है और फिर घरों में घुसता है. हमारे देश में बरसों से नगरीकरण को लेकर चर्चा होती रहती है. सरकारें बड़े-बड़े दावे करती हैं और परियोजनाओं की घोषणा होती है. लेकिन, इन्हें साकार करने के लिए गंभीर प्रयास नहीं होते. इसे मुंबई और गुरुग्राम के उदाहरणों से समझा जा सकता है. मुंबई एक बहुत पुराना शहर है, किंतु गुरुग्राम को बसे कुछ दशक ही हुए हैं. इसके बावजूद देश की राजधानी से सटे इस नये शहर की परियोजनाओं को ठीक से तैयार नहीं किया है और मुंबई जैसे शहरों के अनुभवों का भी समुचित संज्ञान नहीं लिया गया है. परिणाम यह है कि हर साल मुंबई भी डूबती है और गुरुग्राम में भी पानी भर जाता है. निकासी की व्यवस्था में समुचित निवेश न होना भी एक प्रमुख कारक है. सरकारें या शहरी विकास से जुड़े विभाग जितना ध्यान सड़कों, पुलों और भवनों की गुणवत्ता एवं डिजाइन पर देते हैं, उसकी तुलना में निकासी को दुरुस्त करने की कोशिश नहीं होती. उन्हें बदलने और बनाने का काम भी प्राथमिकता में नहीं होता है. शहरी विस्तार ने प्राकृतिक जल निकायों को अतिक्रमण का शिकार बनाया है. इसका एक परिणाम भूजल के स्तर में बड़ी कमी भी है. यदि शासन-प्रशासन अब भी नहीं चेते, तो भविष्य में यह समस्या और भी गहन हो जायेगी. इस संबंध में ठोस नीतिगत पहल होनी चाहिए और शहरी विकास के लिए समुचित निवेश जुटाया जाना चाहिए।

# टकराव से संस्थानों को नुकसान

तीसरी सदी में डियोक्लेशियन ने रोमन साम्राज्य को चार क्षेत्रों में विभाजित कर दिया था. सदी भर की स्थिरता के बाद बंटवारे, महत्वाकांक्षा और लालच के चलते इस व्यवस्था का पतन हो गया. कभी भारतीय लोकतंत्र के चारों स्तंभ अपनी विश्वसनीयता के लिए बाह्य खतरों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करते थे, पर आज हर संस्थान आत्मघाती रास्ते पर है. कुछ दिन पहले आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाइएस जगन मोहन रेड्डी ने सर्वोच्च न्यायालय के जस्टिस एनवी रमन्ना की ईमानदारी पर सवाल उठाते हुए प्रधान न्यायाधीश जस्टिस बोबड़े को पत्र लिख कर सीजेआइ से न्यायिक निष्पक्षता सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है. आंध्र उच्च न्यायालय ने उन राजनेताओं के खिलाफ सीबीआइ जांच का निर्देश देते हुए कहा कि संवैधानिक तौर पर अहम पदों पर बैठे लोगों ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता को नुकसान पहुंचाया है. अटॉर्नी जनरल न्यायिक फैसलों को प्रभावित करनेवाले मीडिया ट्रायल को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट से हस्तक्षेप की मांग कर रहे हैं. चरित्रहनन राष्ट्रीय शगल बन गया है. टीवी चौनल आपसी गलाकाट में लगे हैं. बॉलीवुड अभिनेताओं पर मादक पदार्थों के तस्करी का आरोप लगा कर मीडिया लोगों को आकर्षित करना चाहता है. एंकरों ने उन्हें राष्ट्रवादी और राष्ट्रविरोधी धड़ों में बांट दिया है. अब प्रमुख फिल्मी संस्थाओं और कलाकारों ने अदालत से टीवी चौनलों और एंकरों पर लगाम लगाने की अपील की है. कुल मिलाकर संस्थानों ने निडरता के साथ अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा की है. आपातकाल के दौरान जब इंदिरा गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय की स्वायत्तता को नष्ट करने की कोशिश की, तो विरोध में तीन जजों ने इस्तीफा दे दिया. जब कुछ साल बाद राजीव गांधी की सरकार ने कानून बना कर मीडिया को नियंत्रित करने की कोशिश की, तब मीडिया संस्थानों के मालिकों और संपादकों ने एकजुट विरोध किया और राजीव गांधी को पीछे हटना पड़ा. पचास के दशक में जब प्रेस की स्वतंत्रता खतरे में आयी, तो उनके दामाद फिरोज गांधी ने प्रेस की आजादी की पुरजोर वकालत की थी.जब प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारियों ने प्रधानमंत्री के साथ विदेश जानेवाले पत्रकारों की सूची तैयार की, तो अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें अनुचित दखल के लिए डांटा था. जब मनमोहन सिंह ने कुछ चुनिंदा पत्रकारों से अनौपचारिक बातचीत की, तो किसी ने इसका विरोध नहीं किया. साल 2014 में नरेंद्र मोदी ने अपने जहाज में मुफ्त में पत्रकारों को विदेश दौरे पर ले जाने के विशेषाधिकार को खत्म कर दिया.बड़ी कमाई के पद हासिल करने के लिए पत्रकारों के लिए शक्तिशाली लोगों तक पहुंच ही योग्यता है. इस तरह से अचानक कोई मालिक मालदार बन जाता है. कंटेंट की जगह कनेक्टिविटी ने ले ली है. बड़े नेता, मुख्यमंत्री, मंत्री और नौकरशाह खुद ही सवाल चुनते हैं और उन्हें पूछनेवाले पत्रकारों को भी. नेताओं द्वारा ट्विटर पर फॉलो किये जाने को दिखाकर पत्रकार अपनी पहुंच को इंगित करते हैं. न्यायपालिका की दशा भी ऐसी ही है. नियुक्ति के लिए न्यायाधीश बड़े नेताओं के साथ और केंद्रीय कानून मंत्री के साथ तालमेल बिठाते हैं. फिर भी कुछ ऐसी रुकावटें हैं, जो बड़े पैमाने पर 'अवांछित' उम्मीदवारों को रोकती हैं. बाद में सर्वोच्च न्यायालय ने नियुक्ति और स्थानांतरण का पूर्ण अधिकार अपने हाथ में ले लिया. तब से इसकी प्रतिष्ठा में गिरावट आयी है और भाई-भतीजावाद तथा राजनीतिक प्रभाव का आरोप लगा है. दुर्भाग्य से जजों ने ही एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है. यह तब शुरू हुआ, जब चार जजों ने प्रेस वार्ता कर न्यायपालिका की कार्यशैली पर सवाल खड़ा कर दिया. विडंबना है कि उनमें से कुछ ने बाद में उसी मॉडल को अपनाया. इससे पहले इतनी बड़ी संख्या में न्यायिक फैसलों पर सवाल नहीं उठे थे. सेवानिवृत्ति के बाद लालच ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता को कमजोर कर दिया है. इसकी परंपरा कांग्रेस ने एक पूर्व प्रधान न्यायाधीश को राज्यसभा भेजकर डाली थी. इसके बाद पद हासिल करने की होड़ शुरू हो गयी. न्यायपालिका ढेर सारे ट्रिब्यूनलों की स्थापना के गलत असर का आकलन नहीं कर सकी है. मीडिया और न्यायपालिका में ही गिरावट नहीं आयी है, बल्कि चुनाव आयोग, मानवाधिकार आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, बाल संरक्षण पैनल, अल्पसंख्यक आयोग, सांस्कृतिक व शैक्षणिक निकाय और खेल संस्थाएं भी गिरावट की ओर उन्मुख हैं. वे सामूहिकता के बजाय व्यक्तिगत के लिए लड़ते हैं. सांस्कृतिक मंच जाति और संप्रदायवाद को बढ़ावा दे रहे हैं. भारत की विविधता के संरक्षण के लिए गठित इन संस्थानों ने हद दर्जे का तुष्टिकरण करना शुरू कर दिया. यूजीसी और राज्य शैक्षणिक बोर्ड ने देश की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को नुकसान पहुंचाया है. चुनाव आयोग स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए है. वर्षों से इसकी प्रतिष्ठा धूमिल होती गयी. टीएन शेषन द्वारा प्रभावशाली संवैधानिक शक्तियों के उपयोग के बाद चुनाव आयोग को पदावनत किया गया. कांग्रेस ने इसे तीन सदस्यीय पैनल में बदल दिया और इसका असर भी झेला. बाद में पार्टी ने सरकार में राजनीतिक पदों पर चुनाव आयुक्तों को पुरस्कृत करना शुरू किया. सूचना आयोगों का गठन पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए किया गया है, लेकिन राजनीतिक तौर पर अधिकारियों के चयन से पारदर्शिता प्रभावित हुई है. सभी पदों पर नियुक्ति सेवानिवृत्त सिविल सेवकों, पत्रकारों और मत निर्माताओं की होती है. संस्थागत ह्रास का दोष उन लोगों पर है, जिनके ऊपर नेतृत्व का जिम्मा है. कुछ लोगों का मानना है कि संस्थाओं के आपदा पूर्ण पतन के लिए जिम्मेदार मौजूदा नेतृत्व है. इसमें संदेह नहीं कि हर नेता बांटो और राज करो की नीति से अपना नियंत्रण स्थापित करना चाहता है. अगर अज्ञात शैतान का डर रीढ़विहीन खुशामदों को झुकाता है, तो यह समस्या उन रेंगनेवालों की है. भारतीय संस्थागत ढांचे की विश्वसनीयता तभी बहाल की जा सकती है, जब सेवानिवृत्त सिविल अधिकारी, जज और पत्रकार सरकारी पदों और समर्थन से मुक्त हों. दुर्भाग्य से, भारत उस चरण से गुजर रहा है, जहां व्यक्तिगत लाभ के लिए संस्थाओं को नुकसान पहुंचाया जा रहा है.

# गुपकार घोषणा से जम्मू-कश्मीर में जल्द चुनाव की संभावना समाप्त

जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती की नजरबंदी से रिहाई के अगले दिन 15 अक्टूबर को नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला के आवास पर आमंत्रित गुपकार घोषणा के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने वाले राजनीतिक दलों की बैठक हुई। इस बैठक में सभी दलों के नेताओं ने 4 अगस्त 2019 के तैयार किए गए गुपकार घोषणा प्रस्ताव पर अपनी प्रतिबद्धता दुहराई। 4 अगस्त को आयोजित बैठक में उपस्थित आठ राजनीतिक दलों के नेताओं ने सर्वसम्मति से संविधान की धारा 370 और 35-ए द्वारा संरक्षित जम्मू-कश्मीर की पहचान, स्वायत्तता और उसके विशेष दर्जे को पुनर्जीवित करने के लिए मिलकर प्रयास करने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए। गुपकार घोषणा पर नेशनल कान्फ्रेंस, पीडीपी, पीपुल्स कान्फ्रेंस, पीपुल्स युनाइटेड फ्रंट, अवामी नेशनल कान्फ्रेंस, और पैंथर्स पार्टी के इन छरू क्षेत्रीय दलों के अलावा कांग्रेस और सीपीआई-मार्क्सवादी इन दो राष्ट्रीय दलों के जम्मू-कश्मीर इकाई के नेताओं ने हस्ताक्षर किए थे।भारतीय संसद द्वारा संविधान की धारा- 370 और 35-ए समाप्त करने एवं जम्मू-कश्मीर के केन्द्र शासित दो राज्यों जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख में विभाजन के विरोध में इन दलों की 22 अगस्त 2019 को आयोजित बैठक में फिर से गुपकार घोषणा पर प्रतिबद्धता को दुहराया गया। उसके बाद तो न केवल पाकिस्तान समर्थक जनमत संग्रह की मांग करने वाले बल्कि जम्मू- कश्मीर के अधिकांश राजनीतिक दलों के नेताओं को नजरबंद कर दिया गया था। चालू साल में सरकार ने महबूबा मुफ्ती के अलावा जम्मू-कश्मीर के लगभग सभी नेताओं को नजरबंदी से रिहा कर दिया था।

22 अगस्त 2020 को फारूख अब्दुल्ला की अध्यक्षता में आयोजित गुपकार घोषणा का समर्थन करने वाले राजनीतिक दलों ने पुनरू जम्मू-कश्मीर की पहचान, स्वायत्तता और उसके विशेष दर्जे के संरक्षण हेतु संविधान की धारा-370 और 35-ए को पुनर्जीवित करने के प्रस्ताव की वचनबद्धता दुहराई। आम भारतीयों के दिमाग में यह सवाल उठ सकता है कि इसका गुपचार घोषणा नामकरण किए जाने का क्या कारण हो सकता है। दरअसल उक्त बैठक नेशनल कान्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूख अब्दुल्ला के गुपकार रोड पर स्थित उनके आवास पर आयोजित की गई थी इसलिए इस प्रस्ताव का नामकरण गुपकार घोषणा किया गया। कश्मीर घाटी में मुख्य राजनीतिक धारा के दल नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी दो ही रहे हैं। 2014 के विधानसभा चुनाव से पूर्व तक कश्मीर घाटी के मतदाताओं के बीच विभिन्न राजनीतिक दलों की लोकप्रियता मोटे रूप में इस प्रकार थी, नेशनल कान्फ्रेंस 30 से 35 प्रतिशत, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी पीडीपी 20 से 25 प्रतिशत, कांग्रेस 10 से 15 प्रतिशत, भाजपा 4 से 7 प्रतिशत, धारा 370 के कायम रखने के समर्थक छोटे क्षेत्रीय दल 5 से 10 प्रतिशत, पाकिस्तान और जनमत संग्रह समर्थक क्षेत्रीय दल 6 से 10 एवं अन्य राष्ट्रीय दल 3 से 5 प्रतिशत। यद्यपि नेशनल कान्फ्रेंस और पीडीपी दोनों दल धारा 370 समर्थक दल माने जाते रहे हैं किंतु पिछले कुछ वर्षों से पीडीपी का झुकाव पाकिस्तान की ओर रहा था। जबकि नेशनल कान्फ्रेंस को भारत समर्थक दल माना जाता रहा है। उसकी कांग्रेस के साथ गठबंधन सरकार रही है। उमर अब्दुल्ला की पहली पत्नी भारत के एक कांग्रेसी की पुत्री रही हैं तथा उनकी बहन का विवाह कांग्रेसी नेता सचिन पायलट के साथ होने से अब्दुल्ला परिवार का झुकाव कांग्रेस और भारत की ओर स्वाभाविक रूप में रहा है। सितंबर 2014 में आई भीषण बाढ़ में प्रभावित लोगों तक सही ढंग से राहत सामान नहीं पहुंचने से उपजे असंतोष के कारण नेशनल कान्फ्रेंस को मात्र 17 सीटें ही प्राप्त हो सकी थी जबकि पीडीपी को आश्चर्यजनक ढंग से 28 सीटें मिलीं। जम्मू के मतदाताओं के भारी समर्थन से भाजपा को पहली बार 25 सीटें मिलीं। काफी दिनों बाद महबूबा मुफ्ती के मुख्यमंत्रित्व में पीडीपी व भाजपा के बेमेल गठबंधन सरकार बनी।

भाजपा की सोच थी कि गठबंधन के साथ होने के कारण अपनी विचारधारा के नजदीक ले आएंगे जबकि महबूबा मुफ्ती भाजपा को धारा 370 एवं 35-ए समर्थक बनाना चाहती थी। यह बेमेल गठबंधन ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाया। उमर अब्दुल्ला ने अल्पमत सरकार बनाने से इंकार कर दिया। अंततः जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने लोकसभा में दो तिहाई बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाने के मात्र 2 माह के अन्दर धारा 370 एवं 35-ए के हटाने के साथ ही जम्मू-कश्मीर से लद्दाख को अलग केन्द्र शासित राज्य बनाने का विधेयक पारित करवा लिया। इसके बाद धीरे-धीरे धारा-370 के समर्थक दलों के नेताओं को नजरबंद कर दिया गया था।

भारत के गृहमंत्री अमित शाह ने दो दिन पूर्व एक साक्षात्कार में गुपकार घोषणा के समर्थक दलों द्वारा संविधान की धारा-370 और 35-ए को पुनर्जीवित करने की प्रतिबद्ध प्रयासों के संबंध में पूछे गए एक सवाल के उत्तर में दृढ़ता से कहा कि इन धाराओं की वापसी की कोई संभावना नही है। यह तो सही है कि जब तक केन्द्र में भाजपा का शासन है जम्मू-कश्मीर के एकीकरण करके विशेष दर्जा प्राप्त राज्य बनने की कोई संभावना नहीं है। यदि धारा-370 एवं 35-ए को पुनर्जीवित करने के लिए फारूख अब्दुल्ला की अगुवाई में गुपकार घोषणा करने के लिए बैठक नहीं की गई होती और ये सभी नेता देखो और इंतजार करने की नीति अपनाते तो संभवतरू केन्द्र सरकार जम्मू-कश्मीर में शीघ्र चुनाव करवाने के बारे में निर्णय ले लेती। उस स्थिति में नेशनल कांफ्रेंस की अगुवाई में आठ दलों के गठबंधन की विधानसभा चुनाव में बड़े आराम से दो तिहाई सीटें जीत की संभावना थी। किंतु फारूख अब्दुल्ला ने कुछ माह पहले अपने एक वक्तव्य में कश्मीरियों का समर्थन करने के लिए इमरान खान का धन्यवाद ज्ञापन किया। यही नहीं, उन्होंने अभी हाल में अमेरिका व चीन से अपील कि वे पाकिस्तान की तर्ज पर धारा-370 के संबंध में भारत पर दबाव बनाएं। गुपकार घोषणा के केन्द्र सरकार पर विपरीत प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक थी। अब जम्मू-कश्मीर में निकट भविष्य में चुनाव की दूर-दूर तक संभावना नहीं है। गुपकार घोषणा का नतीजा यह हुआ कि केन्द्र सरकार द्वारा टैक्स इन्फोर्समेंट विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह फारूख अब्दुल्ला द्वारा जम्मू-कश्मीर क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में किए गए 35 करोड़ रुपये की घपले की जांच आगे बढ़ाए। उसी प्रकार कश्मीर के क्षेत्रीय दलों के अनेक नेताओं पर आमदनी से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप की भी जांच चल रही है। जैसा कि गृहमंत्री अमित शाह के अपने साक्षात्कार में दावा किया है कि धारा-370 मृत हो चुकी है इसलिए गुपकार घोषणा का कोई मतलब नहीं है। आगे क्या होता है यह तो भविष्य ही बताएगा।

**सार समाचार .....**

# डबल सुपर ओवर के बाद किंग्स इलेवन के सामने टॉप पर काबिज दिल्ली की चुनौती

- इस मैदान पर हुए कुल टी-20: 61
- पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम जीती: 34
- पहले गेंदबाजी करने वाली टीम जीती: 26
- पहली पारी में टीम का औसत स्कोर: 144
- दूसरी पारी में टीम का औसत स्कोर: 122

दुबई | एजेंसी।

आईपीएल के 13वें सीजन का 38वां मैच किंग्स इलेवन पंजाब और दिल्ली कैपिटल्स के बीच शाम 7.30 बजे से दुबई में खेला जाएगा। रविवार को आईपीएल के इतिहास का इकलौता डबल सुपर ओवर (एक मैच में 2 सुपर ओवर) जीतकर आ रही पंजाब की टीम दिल्ली के खिलाफ जीत दर्ज कर टूर्नामेंट में अपनी उम्मीदें कायम रखना चाहेगी। वहीं, दिल्ली के कप्तान श्रेयस अय्यर इस मैच को जीतकर प्ले-ऑफ में जगह पक्की करना चाहेंगे।

**16 पॉइंट पर क्वालिफिकेशन लगभग तय**

आईपीएल में 8 जीत यानि 16 पॉइंट के साथ प्ले-ऑफ में टीम की जगह लगभग तय मानी जाती है। दिल्ली ने सीजन में अब तक 9 में से 7 मैच जीतकर 14 पॉइंट के साथ फिलहाल वह टेबल में टॉप पर है। वहीं, पंजाब 9 में से 3 मैच जीतकर 7वें नंबर पर काबिज है।

**सीजन का पहला सुपर ओवर इन्हीं दोनों टीमों ने खेला था** सीजन का पहला सुपर ओवर दिल्ली-पंजाब के बीच ही खेला गया था। रबाडा की शानदार गेंदबाजी की बदौलत दिल्ली ने पंजाब को हराया था। दुबई में खेले गए मैच में दोनों ही टीमों ने 157 रन बनाए थे। बाद में मैच का फैसला सुपर ओवर में निकला था।

**राहुल-मयंक टॉप रन स्कोरर** पंजाब के कप्तान लोकेश राहुल और साथी ओपनर मयंक अग्रवाल लीग में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। राहुल (525) सीजन में 500 से ज्यादा रन बनाने वाले इकलौते बल्लेबाज हैं। वहीं, मयंक 393 रन बनाकर लिस्ट में दूसरे स्थान पर हैं।

**शमी-बिश्नोई शानदार फॉर्म में** पंजाब के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी और रवि बिश्नोई शानदार फॉर्म में चल रहे हैं। शमी ने सीजन में अब तक 14 विकेट लिए हैं। वहीं, रवि बिश्नोई ने अब तक 9 बल्लेबाजों को आउट किया है।

**दिल्ली के लिए शिखर धवन फॉर्म में** दिल्ली के ओपनर शिखर धवन ने अपनी टीम के लिए सबसे ज्यादा 359 रन बनाए हैं। धवन के बाद कप्तान श्रेयस अय्यर का नंबर आता है। अय्यर ने सीजन में अब तक 321 रन बनाए हैं।

**पर्पल कैप पर रबाडा का कब्जा** पर्पल कैप की रेस में दिल्ली के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा काफी आगे दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने सीजन में सबसे ज्यादा 19 विकेट अपने नाम किए हैं। इसके बाद दिल्ली के लिए एनरिच नोर्तजे ने 12 बल्लेबाजों को आउट किया है।

**मौसम और पिच रिपोर्ट** दुबई में आसमान साफ रहेगा। तापमान 22 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। यहां पिच से बल्लेबाजों को मदद मिल सकती है। यहां स्लो विकेट होने के कारण स्पिनर्स को भी काफी मदद मिलेगी। दुबई में टॉस जीतने वाली टीम पहले बल्लेबाजी करना पसंद करेगी। इस आईपीएल से पहले यहां हुए पिछले 61 टी-20 में पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम की जीत का सक्सेस रेट 55.74 प्रतिशत रहा है।

**दिल्ली अकेली टीम, जो अब तक फाइनल नहीं खेली** दिल्ली अकेली ऐसी टीम है, जो अब तक फाइनल नहीं खेल सकी। हालांकि, दिल्ली टूर्नामेंट के शुरुआती दो सीजन (2008, 2009) में सेमीफाइनल तक पहुंची थी। वहीं, पंजाब ने अब तक 1 बार फाइनल (2014) खेला था। उसे केकेआर ने 3 विकेट से हराया था।

**आईपीएल में पंजाब का सक्सेस रेट दिल्ली से ज्यादा** आईपीएल में पंजाब का सक्सेस रेट दिल्ली से ज्यादा है। दिल्ली ने अब तक कुल 186 मैच खेले हैं।

84 मैच में उसे जीत मिली और 100 में उसे हार का सामना करना पड़ा। 2 मैच बेनतीजा रहे। दिल्ली का लीग में सक्सेस रेट 45.38 प्रतिशत है। वहीं, पंजाब ने अब तक कुल 185 मैच खेले हैं।

## पहले सुपर ओवर का नॉटआउट बल्लेबाज दूसरे में भी बैटिंग कर सकता है

पेरिस , एजेंसी। किंग्स इलेवन पंजाब और मुंबई इंडियंस के मुकाबले का नतीजा सुपर ओवर में आया। वो भी एक नहीं, बल्कि दो सुपर ओवर हुए। कई फैंस का मानना है कि मैच में मुंबई को हार इसलिए मिली क्योंकि दूसरे सुपर ओवर में बुमराह की जगह बोल्ट ने गेंदबाजी की। आखिर ऐसा क्यों हुआ? हम आपको इस बारे में बता रहे हैं-

**मैच में दूसरा सुपर ओवर क्यों लेना पड़ा?**

पहले सुपर ओवर में स्कोर बराबर हो गया था। इस कारण ऐसा करना पड़ा। 2019 में हुए वनडे वर्ल्ड कप से पहले सुपर ओवर टाई होने पर अधिक बाउंड्री लगाने वाली टीम विजेता बनती थी। पर वर्ल्ड कप के बाद इसमें बदलाव किया गया।

**आखिरकार सुपर ओवर को लागू क्यों किया गया?**

मैच टाई होने पर रिजल्ट निकालने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। पहले यदि नॉकआउट मैच टाई होता था, तो ग्रुप में अच्छा प्रदर्शन करने वाली टीम विजेता बन जाती थी। पहली बार 2008 में न्यूजीलैंड-विंडीज के टाई टी-20 में इसका उपयोग किया गया था।

**सुपर ओवर के गेंदबाज-बल्लेबाज कैसे चुने जाते हैं?**

हर टीम की ओर से तीन बल्लेबाज और एक गेंदबाज का नाम देना होता है। दो बल्लेबाज के आउट होने पर पारी खत्म हो जाती है। यदि सुपर ओवर टाई हो जाता है तो दूसरे सुपर ओवर में नया गेंदबाज गेंद फेंकेगा। नियम के अनुसार, एक गेंदबाज को एक ही बार मौका मिलता है। इसी कारण मुंबई की ओर से बुमराह को दूसरे सुपर ओवर में गेंदबाजी नहीं मिली।

वहीं यदि कोई बल्लेबाज एक बार आउट हो जाता है तो दूसरी बार नहीं उतर सकता। लेकिन यदि वह पहले सुपर ओवर में बल्लेबाजी करते हुए नाबाद रहता है तो वह दूसरे सुपर ओवर में भी उतर सकता है।

**क्या सभी टाई मैच में सुपर ओवर का उपयोग होता है?**

वनडे में इसका उपयोग आईसीसी इवेंट के नॉकआउट मैच में होता है। आईसीसी इवेंट के ग्रुप स्टेज के मुकाबले टाई होने पर दोनों टीम को बराबर-बराबर पॉइंट दिए जाते हैं। टी20 में कोई भी मैच यदि टाई होता है तो उसमें सुपर ओवर का उपयोग किया जाता है।

**कितने मैच का रिजल्ट सुपर ओवर से आया है?**

वनडे में एक जबकि टी-20 के 14 मैच का रिजल्ट सुपर ओवर से आया। महिला इंटरनेशनल की बात की जाए तो एक टी-20 मैच में इसका उपयोग किया गया।? आईपीएल की बात की जाए तो अब तक 13 मैच में सुपर ओवर का उपयोग किया गया है। सीजन शुरू होने के पहले सभी कप्तानों ने फैसला किया था कि मैच शुरू होने के साढ़े 4 घंटे के अंदर सुपर ओवर शुरू नहीं हुआ तो दोनों टीमों को 1-1 अंक मिलेंगे।

## सिंधु के पिता ने पुलेला गोपीचंद पर लगाए आरोप

**नई दिल्ली, एजेंसी।** वर्ल्ड चैंपियन पीवी सिंधु के पिता पीवी रमन्ना ने कहा है कि उनकी बेटी बैडमिंटन विश्व महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) के कैलेंडर के अगले साल होने वाले एशियाई दौर की तैयारी के लिए लंदन में है, क्योंकि हैदराबाद में चल रहे राष्ट्रीय शिविर में वह ज्यादा प्रैक्टिस नहीं कर पा रही थी। ओलंपिक सिल्वर मेडलिस्ट सिंधु पिछले 10 दिन से लंदन में हैं और सोमवार को उन्होंने सोशल मीडिया पर गेटोरेड खेल विज्ञान संस्थान (जीएसएसआई) की खेल पोषण विशेषज्ञ रेबेका रेंडेल के साथ तस्वीर पोस्ट की। सिंधू जीएसएसआई में ही ट्रेनिंग कर रही हैं। ज्यादातर समय सिंधु की जगह उनका पक्ष रखने वाले रमन्ना ने परिवार में विवाद के कारण इस बैडमिंटन खिलाड़ी के भारत से जाने की खबरों को खारिज करते हुए कहा, वह पिछले 10 दिन से लंदन में है। हम दो महीने तक उसके साथ नहीं रह सकते इसलिए वह अकेली गई है। कोविड-19 महामारी के कारण बीडब्ल्यूएफ को विश्व टूर फाइनल्स (27-31 जनवरी) और दो एशिया ओपन (2-17 जनवरी और 19-24 जनवरी) को अगले साल जनवरी में बैंकॉक में कराने का फैसला लिया गया। रमन्ना ने कहा कि यह स्टार खिलाड़ी राष्ट्रीय शिविर में अपनी ट्रेनिंग से खुश नहीं थी। उन्होंने कहा, यहां वह ज्यादा प्रैक्टिस नहीं कर पा रही थी। एशियाई खेल 2018 के बाद गोपी (मुख्य कोच पुलेला गोपीचंद) ने उसकी ट्रेनिंग में रुचि नहीं दिखाई। उन्होंने उसके साथ ट्रेनिंग के लिए उपयुक्त अभ्यास जोड़ीदार मुहैया नहीं कराया। रमन्ना ने दावा किया, वह स्तरीय अभ्यास नहीं कर पा रही थी और अपने साथ हो रहे व्यवहार से तंग आ चुकी थी। संपर्क करने पर गोपीचंद ने पुष्टि की कि सिंधु ने लंदन जाने के बारे में उन्हें सूचित किया था लेकिन उन्होंने रमन्ना की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया। गोपीचंद ने कहा, हमारे पास यही सूचना है कि वह गेटोरेड ट्रेनिंग एकैडमी गई है। वहां उनका ट्रेनिंग संस्थान है। मुझे कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी नहीं है। उन्होंने कहा, उसके पिता क्या कह रहे हैं इस पर मैं प्रतिक्रिया नहीं देना चाहता, अगर सिंधु कुछ कहती है तो मैं प्रतिक्रिया दूंगा।

## 19 साल की लड़की ने फ्रेंच ओपन जीत रचा इतिहास

धोनी-कार्तिक मिलकर भी शुभमन के बराबर रन नहीं बना सके दुनिया की सबसे महंगी क्रिकेट लीग युवा खिलाड़ियों के लिए सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म है। जसप्रीत बुमराह, हार्दिक पंड्या, दीपक चाहर, नवदीप सैनी, ऋुणाल पंड्या जैसे खिलाड़ियों ने में दम दिखाकर टीम इंडिया में जगह बनाई है। इस बार देवदत्त पडिक्कल, शुभमन गिल और राहुल तेवतिया जैसे यंग प्लेयर्स कमाल दिखा रहे हैं। शुभमन टीम इंडिया के लिए 2 वनडे खेल चुके हैं, जबकि पडिक्कल और तेवतिया ने दावेदारी पेश की है। इन युवा खिलाड़ियों के आगे महेंद्र सिंह धोनी, दिनेश कार्तिक और रॉबिन उथप्पा जैसे सीनियर प्लेयर भी फीके नजर आ रहे हैं। लगभग हर सीजन में हीरो रहे यह सीनियर खिलाड़ी इस बार स्ट्रगल करते नजर आ रहे हैं। वहीं, रविचंद्रन अश्विन और पीयूष चावला समेत 5 सीनियर गेंदबाज एक भी मेडन ओवर नहीं डाल सके हैं।

**पडिक्कल और प्रियम ने डेब्यू सीजन में दिखाया दम** रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के ओपनर पडिक्कल और सनराइजर्स हैदराबाद के बल्लेबाज प्रियम गर्ग का यह डेब्यू सीजन है। पडिक्कल ने अब तक 9 पारियों में 296 और प्रियम ने 7 पारियों में 106 रन बनाए हैं। इस दौरान पडिक्कल ने 3 और प्रियम ने 1 फिफ्टी के साथ टीम को मैच जिताए हैं। कोलकाता नाइट राइडर्स के शुभमन गिल अपना तीसरा और मुंबई इंडियंस के ईशान किशन 5वां सीजन खेल रहे हैं। शुभमन ने 9 मैच में 2 फिफ्टी के साथ 311 और ईशान ने 7 मैच में एक अर्धशतक के साथ 193 रन बनाए हैं।

**धोनी और कार्तिक मिलकर शुभमन के बराबर भी रन नहीं बना सके** चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और आधे टूर्नामेंट में कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी छोड़ने वाले दिनेश कार्तिक इस सीजन में एक-एक रन के लिए जूझ रहे हैं। दोनों ने अब तक 9-9 मैच खेले, जिनमें कार्तिक ने 141 और धोनी ने 136 रन बनाए हैं। दोनों के कुल रन शुभमन (311) से भी कम हैं। वहीं, राजस्थान रॉयल्स के रॉबिन उथप्पा का बल्ला भी इस सीजन में खामोश ही है। उन्होंने 7 मैच में 124 रन बनाए हैं।

**ऑलराउंडर तेवतिया से पीछे सीनियर जडेजा** में 180 मैच खेल चुके सीनियर ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा 30 मैच खेलने वाले जूनियर प्लेयर राहुल तेवतिया से हर मामले में पीछे हैं। तेवतिया ने इस सीजन के 9 मैच में 222 रन बनाए और 6 विकेट भी लिए। वहीं, जडेजा 9 मैच 159 रन ही बना सके और 4 विकेट लिए।

**बॉलर बिश्नोई और त्यागी का शानदार डेब्यू** किंग्स इलेवन पंजाब के रवि बिश्नोई और राजस्थान रॉयल्स के कार्तिक त्यागी का यह डेब्यू सीजन है। दोनों ने अपनी शानदार बॉलिंग से सबका ध्यान खींचा है। रवि ने 9 मैच में 9 और कार्तिक ने 5 मैच में 5 विकेट लिए हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के तेज गेंदबाज टी नटराजन इस सीजन में यॉर्कर स्पेशलिस्ट बनकर उभरे हैं। दूसरा सीजन खेल रहे नटराजन ने अब तक उन्होंने 9 मैच में 11 विकेट लिए। इस दौरान उन्होंने सबसे ज्यादा 29 यॉर्कर डाली हैं। जबकि टीम इंडिया के रेगुलर बॉलर जसप्रीत बुमराह 17 ही यॉर्कर डाल सके हैं। हालांकि, बुमराह विकेट के मामले में आगे हैं। उन्होंने 9 मैच में 15 विकेट लिए हैं। नटराजन के अलावा शिवम मावी, मुरुगन अश्विन और कार्तिक त्यागी जैसे यंग प्लेयर्स ने भी शानदार प्रदर्शन किया है।

**कुलदीप और विजय शंकर विकेट के लिए तरसे** भारतीय टीम के लिए मैच खेल चुके कुलदीप यादव और विजय शंकर इस सीजन में विकेट के लिए तरस गए हैं। 4-4 मैच खेलने के बाद शंकर ने सिर्फ 2 और कुलदीप ने एक ही विकेट लिया है। इनके अलावा रविचंद्रन अश्विन, पीयूष चावला, जयदेव उनादकट भी अपने नाम के हिसाब से खेल नहीं दिखा सके।

**रॉयल्स की धार के आगे चेन्नई के बल्लेबाज फेल**

**आबुधाबी के शेख जाएद स्टेडियम में खेले जा रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2020 के 37वें मैच में सोमवार को चेन्नई सुपर किंग्स ने राजस्थान रॉयल्स के सामने 126 रन का लक्ष्य रखा। धोनी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है। चेन्नई के रविंद्र जडेजा ने सर्वाधिक 30 गेंदों पर 35 रन की पारी खेली, जिसमें चार चौके शामिल रहे। इससे पहले तीसरे ओवर की आखिरी गेंद पर चेन्नई सुपर किंग्स को जोफा आर्चर ने पहला झटका दिया।**

## भारतीय महिलाएं ऑनलाइन शतरंज के क्वार्टर फाइनल में

**चेन्नई एजेंसी।** ,

शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय महिला शतरंज टीम ने सोमवार को तीन जीत के साथ प्रारंभिक चरण में पहले स्थान पर रहते हुए सोमवार को एशियाई ऑनलाइन नेशंस कप टीम चैम्पियनशिप के क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। भारत के नाम 16 अंक हैं जबकि फिलीपींस और ईरान 13-13 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। भारतीय टीम क्वार्टर फाइनल में किर्गिस्तान का सामना करेगी। भारतीय टीम ने सातवें दौर में फिलीपींस को 3-1, आठवें दौर में कजाखस्तान को 2.5-1.5 और नौवें दौर में वियतनाम को 2.5-1.5 से हराया। नौ दौर के प्रारंभिक चरण में भारतीय टीम के लिए आर. वैशाली ने सबसे ज्यादा 6.5 अंक जुटाये जबकि मेरी एन गोमेज ने पांच अंक का योगदान दिया।

## पूर्व चीफ सिलेक्टर का धोनी पर तंज

**दुबई , एजेंसी।** इंडिया टीम के पूर्व सेलेक्टर के श्रीकांत ने चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की युवाओं को मौका नहीं देने पर आलोचना की है। उन्होंने प्लेइंग इलेवन में केदार जाधव और पीयूष चावला को भी टीम में शामिल किए जाने पर सवाल उठाए हैं। श्री कांत ने स्टार स्पोर्ट्स तमिल से बात करते हुए कहा- मैं स्वीकार नहीं करूंगा कि धोनी क्या कह रहे हैं। आप हर वक्त प्रोसेस की बात करते हैं, लेकिन आपका सेलेक्शन प्रोसेस ही गलत है। उन्होंने कहा आगे कहा- धोनी महान खिलाड़ी हैं, लेकिन मैं उनके इस बात से सहमत नहीं हूं कि युवाओं में उन्हें जुनून नहीं दिखा। उन्हें पीयूष- जाधव में ऐसा क्या दिखा है, जो जगदीशन में नहीं दिखा। वह उसमें किस तरह का जुनून देखना चाहते हैं। श्रीकांत ने इंडिया के लिए 43 टेस्ट में 29.88 की औसत से 2062 रन और 146 वनडे में 29.01 की औसत से 4,091 रन बनाए हैं।

**युवा खिलाड़ियों को मौका दिया जाएगा** धोनी ने चेन्नई की सातवीं हार के बाद कहा था, कि बचे हुए आगे के मैचों में युवाओं को मौका देंगे। क्योंकि प्लेऑफ में जाने का दबाव खत्म हो गया है। वे बिना दबाव में बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे। धोनी ने कहा था की युवाओं को अब तक इसलिए मौका नहीं दिया क्योंकि वे उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाए। उनका प्रदर्शन ऐसा नहीं था कि टीम मैनेजमेंट सीनियर्स प्लेयर्स को ड्रॉप कर उन्हें लेने के लिए मजबूर हो सके।

**जगदीशन ने एक मैच में बनाए 33 रन** युवा खिलाड़ी नारायण जगदीशन को एक मैच में मौका मिला था। जगदीशन ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ खेले मैच में 33 रन बनाए थे। जबकि ऋतुराज गायकवाड़ को दो मैच खेलने का मौका मिला। जिसमें उन्होंने 5 रन बनाए थे। **जाधव ने बनाए 62 रन** केदार जाधव ने 8 मैचों में 62 रन बनाए। वहीं पीयूष चावला राजस्थान के खिलाफ मैचको 3 ओवर में 32 रन दिए थे।

उन्हें एक भी विकेट नहीं मिला था।

## शमी सुपर छह यॉर्कर फेंकना चाहता था : राहुल

दुबई | एजेंसी।

किंग्स इलेवन पंजाब के कप्तान लोकेश राहुल ने कहा है कि रविवार को यहां मुंबई इंडियंस के खिलाफ रोमांचक इंडियन प्रीमियर लीग मुकाबले में सिर्फ पांच रन का बचाव करने के दौरान तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी सुपर ओवर में छह यॉर्कर फेंकना चाहते थे। नियमित 20 ओवर के बाद मैच टाई रहा। किंग्स इलेवन पंजाब की टीम इसके बाद पहले सुपर ओवर में पांच रन ही बना सकी। शमी ने हालांकि शानदार गेंदबाजी करते हुए मुंबई को इसी स्कोर पर रोक दिया। किंग्स इलेवन पंजाब ने अंततः दूसरे सुपर ओवर में जीत दर्ज की। राहुल ने मैच के बाद कहा, 'आप कभी सुपर ओवर के लिए तैयारी नहीं कर सकते। कोई टीम ऐसा नहीं कर सकती। इसलिए आपको गेंदबाज पर भरोसा करना होता है। आप गेंदबाज पर भरोसा करते हो और उम्मीद करते हो कि वह अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार गेंदबाजी करेगा।' उन्होंने कहा, 'वह (शमी) बिलकुल स्पष्ट था। वह छह यॉर्कर फेंकना चाहता था। उसने शानदार काम किया और प्रत्येक मैच के साथ बेहतर हो रहा है।% मैच में 77 रन की पारी खेलने के लिए मैन आफ द मैच चुने गए राहुल ने जीत पर खुशी जताई लेकिन कहा कि उनकी टीम इस तरह जीत दर्ज करने की आदत नहीं बनाना चाहती। अंत में हम दो अंक स्वीकार करेंगे।% मुंबई इंडियंस के बल्लेबाज कीरोन पोलार्ड ने कहा कि मैच ने दिखाया कि प्रत्येक रन मायने रखता है। गत चैंपियन मुंबई इंडियंस के खिलाफ रोमांचक मुकाबले में जीत से किंग्स इलेवन पंजाब का मनोबल बढ़ा होगा, लेकिन निरंतर प्रदर्शन करने में नाकाम रही इस टीम की राह आसान नहीं होगी। मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग के अपने अगले मैच में उसे अंक तालिका में शीर्ष पर चल रहे दिल्ली कैपिटल्स से भिड़ना है। सत्र की शुरुआत में 2 बेहद करीबी मैच गंवाने के बाद किंग्स इलेवन की टीम पिछले 2 मैचों में वांछित नतीजे हासिल करने में कामयाब रही है। डेथ ओवरों की गेंदबाजी, ग्लेन मैक्सवेल की खराब फॉर्म और कमजोर मध्यक्रम टीम की चिंता का विषय है। प्ले आफ में जगह बनाने के लिए अब किंग्स इलेवन को अपने बाकी बचे पांचों मैच जीतने होंगे। टूर्नामेंट के शीर्ष 2 स्कोरर सलामी बल्लेबाजों राहुल (525) और मयंक अग्रवाल (393) की मौजूदगी के बावजूद टीम को जीत हासिल करने के लिए जूझना पड़ा है। क्रिस गेल की सफल वापसी से हालांकि सलामी बल्लेबाजों के ऊपर से दबाव कम हुआ है, विशेषकर राहुल अब अधिक खुलकर खेल सकते हैं। निकोलस पूरन दिखा चुके हैं कि वह क्या करने में सक्षम हैं, लेकिन उन्होंने अब तक टीम को जीत दिलाने वाली पारी नहीं खेली है। बल्लेबाज के रूप में मैक्सवेल पर दबाव बढ़ रहा है, लेकिन वह उपयोगी स्पिनर साबित हो रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हालांकि टीम के मैक्सवेल के साथ ही बरकरार रहने की उम्मीद है। वहीं, दिल्ली की टीम मौजूदा टूर्नामेंट में अब तक सबसे सफल टीम रही है और शनिवार रात चेन्नई सुपरकिंग्स के खिलाफ करीबी मैच में जीत से उसका मनोबल बढ़ा होगा।

## पहली राष्ट्रीय थ्रो चैंपियनशिप स्थगित

**नयी दिल्ली एजेंसी।**

भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने देश में कोविड-19 के बढ़ते मामलों को देखते हुए सोमवार को पहली राष्ट्रीय थ्रो चैंपियनशिप को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया। इस दो दिवसीय प्रतियोगिता का आयोजन पटियाला में 26 और 27 अक्तूबर को होना था। एएफआई अध्यक्ष आदिले सुमारिवाला ने कहा, 'हमने मुख्य कोच, हाई परफार्मेंस निदेशक और अन्य कोचों से सलाह के बाद हमने अगले फैसले तक थ्रो प्रतियोगिता को स्थगित करने का फैसला किया है।

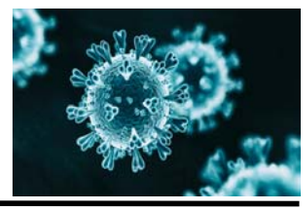

## डीडीएलजे ने बॉलीवुड में बिहाइंड द सीन का ट्रेंड शुरू किया- उदय चोपड़ा

शाहरुख खान और काजोल स्टारर फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे 20 अक्टूबर को हिंदी सिनेमा में 25 साल पूरे करने के लिए तैयार है। अभिनेता उदय चोपड़ा ने इस फिल्म के सेट पर बतौर सहायक काम किया था। उन्होंने याद करते हुए बताया कि कैसे फिल्म ने बॉलीवुड में बिहाइंड द सीन (बीटीएस) वीडियो का चलन शुरू किया। डीडीएलजे उदय के बड़े भाई आदित्य चोपड़ा के निर्देशन में बनी पहली फिल्म है। आदित्य को बॉलीवुड जगत में आदित्य के नाम से जाना जाता है। उदय ने कहा, आदि डीडीएलजे से कुछ ऐसा करना चाहते थे जो भारत में पहले किसी ने नहीं किया था। उन्होंने मुझे मेकिंग के निर्देशन का प्रभार दिया और हालांकि यह पहले नहीं किया गया था, इसलिए मुझे इसे लेकर बहुत सारी चीजों का आविष्कार करना पड़ा। कैलिफोर्निया में फिल्म स्कूल से वापस आने के बाद मैंने तय किया कि फिल्म निर्माण के एक अन्य पहलू पर अपना हाथ आजमाने का यह एक शानदार अवसर होगा।

उन्होंने आगे कहा, पहली चीज जो हमें चाहिए थी वह सेट और बैक पर बहुत सारे फुटेज की थी और इसके लिए एस-वीएचएस एकमात्र विकल्प था। इसलिए, सेट पर एक सहायक होने के अलावा मैं बीटीएस फुटेज का वीडियोग्राफर भी बन गया। उदय ने आगे कहा, मैं सेट पर हर ओर नजर रखता था। इसका यह फायदा हुआ, जो मुझे बाद में पता चला कि सभी कलाकार मेरे होने से वहां बहुत सहज थे।

## आदर जैन का इनकार, नहीं हो रही गर्लफ्रेंड तारा सुतारिया से शादी

**हाल में कुछ रिपोर्ट्स सामने आई थीं जिनमें कहा गया था कि आदर जैन अपनी गर्लफ्रेंड और बॉलिवुड ऐक्ट्रेस तारा सुतारिया से जल्द ही शादी करने वाले हैं। मीडिया में इन खबरों के आने के बाद आदर जैन ने इन्हें गलत बताते हुए कहा है कि अभी उनका शादी करने का कोई इरादा नहीं है। पिछले काफी समय से चर्चा है कि तारा सुतारिया और आदर जैन एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। कई मौकों पर तारा सुतारिया के साथ दिखाई दिए आदर जैन ने अपने स्टेटमेंट में कहा कि शादी की खबरें पूरी तरह निराधार और झूठी हैं। आदर जैन इस समय अपनी अगली फिल्म हेलो चार्ली में बिजी हैं और उसकी शूटिंग कर रहे हैं। आदर जैन ने फिल्म कैदी बैंड से फिल्मों में डेब्यू किया था। इससे पहले तारा सुतारिया को आदर जैन के साथ उनके बड़े भाई अरमान जैन की शादी में एक साथ देखा गया था। वर्क फ्रंट की बात करें तो पिछली बार फिल्म मरजावां में दिखाई दीं तारा सुतारिया के पास इस समय तड़प और एक विलन 2 जैसी फिल्में हैं। तड़प सुपरहिट तेलुगू फिल्म आरएक्स 100 का हिंदी रीमेक है जिससे सुनील शेट्टी के बेटे अहान शेट्टी डेब्यू करने जा रहे हैं। एक विलन 2 का डायरेक्शन मोहित सूरी कर रहे हैं जिसमें तारा सुतारिया के साथ जॉन अब्राहम, दिशा पाटनी और आदित्य रॉय कपूर दिखाई देंगे।**

## राजकुमार की छलांग' का ट्रेलर रिलीज

बॉलीवुड अभिनेता राजकुमार राव की आने वाली फिल्म छलांग' का ट्रेलर रिलीज कर दिया गया है। हंसल मेहता के निर्देशन में बनी छलांग' में राजकुमार राव और नुसरत भरूचा प्रमुख भूमिका में हैं। यह फिल्म बाल दिवस पर 13 नवंबर को रिलीज हो रही है। राज कुमार राव ने कहा, स्पोर्ट्स मजेदार होने के साथ बच्चों के चरित्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। छलांग ने मुझे वापस मेरे स्कूल के दिनों की याद दिला दी।जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि किस तरह स्कूल में जिन खेलों को मैं खेलता था उसी ने मुझे आज एक व्यक्ति के तौर पर आकार दिया है। यह एक बेहद खास फिल्म है। मैं इस प्रेरित करने वाली फिल्म के दुनियाभर में रिलीज होने का इंतजार कर रहा हूँ और उम्मीद करता हूँ की यह फैमिली एंटरटेनर फिल्म एक शक्तिशाली संदेश लोगों तक पहुंचाने के साथ बचपन की खुशभरी यादों को भी अपने साथ लाएगी। नुसरत भरुचा ने कहा, मुझे फिल्मों में अनोखी और रोमांचक भूमिकाएँ करने में बहुत खुशी होती है और फिल्म छलाँग में मेरा किरदार भी ऐसा ही है जिसे मैंने इससे पहले कभी नहीं निभाया है। जब यह फिल्म मुझे पेश की गई तो इस अनोखे किरदार को निभाते हुए मैं काफी उत्साहित थी और इसके साथ ही राजकुमार राव, सौरभ शुक्ला और सतीश कौशिक जैसे इंडस्ट्री की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं के साथ मुझे काम करने का मौका मिला जो उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं। हंसल मेहता ने कहा, एक बेहद हल्की फुल्की कॉमेडी के साथ हमने यह फिल्म एक खूबसूरत संदेश पहुंचाने की उम्मीद के साथ बनाई है। हालांकि, छलांग छात्र और शिक्षक के जीवन के लिए एक बेहद प्रासंगिक फिल्म है लेकिन इसके साथ ही यह प्यार, कॉमेडी, दोस्ती, दुश्मनी के भावों का संपूर्ण पैकेज और इमोशनल ड्रामा है जो इसे दीपावली का परफेक्ट फैमिली एंटरटेनर बनाता है। हम अमेजन प्राइम वीडियो पर इस फिल्म के वैश्विक रिलीज़ का इंतजार कर रहे हैं।

## लेटेस्ट फोटोज में निया शर्मा के बोल्ड अंदाज को देख फैंस ने कहा- उफ्फ

**टीवी एक्ट्रेस निया शर्मा अक्सर अपने बोल्ड लुक के कारण सुर्खियों में रहती हैं। निया के चाहने वाले उनकी इन तस्वीरों को काफी पसंद भी करते हैं। आइए आपको दिखाते हैं उनका बोल्ड अंदाज। इन फोटोज में निया का लुक और अंदाज देखने लायक है। निया की इन तस्वीरों को उनके फैन्स खूब पसंद कर रहे हैं और दिल खोलकर कमेंट्स भी कर रहे हैं। निया शर्मा सोशल मीडिया पर कभी ट्रेडिशनल लुक, कभी ग्लैमरस अंदाज तो कभी बोल्ड अवतार में तहलका मचाती रहती हैं। निया को उनके स्टाइल और ड्रेसिंग सेंस के लिए जाना जाता है, तभी तो उन्हें हमेशा फैंस की तारीफ मिलती हैं। निया के सोशल मीडिया पर हजारों फैन्स हैं, जो उनकी तस्वीरों पर जमकर लाइक और कमेंट्स करते हैं। निया के फैन्स भी उनके हर अंदाज को काफी प्यार देते हैं।**

## दिशा पटानी ने मिरर सेल्फी से फैंस का दिल जीता

बॉलीवुड अभिनेत्री दिशा पटानी ने अपने नए सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फैंस का दिल जीत लिया। अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर शेयर की, जिसमें वह मिरर के सामने खड़ी हैं। अभिनेत्री ग्रे रंग की स्पोर्ट्स ब्रा और ब्लू रंग की हाफ पैंट पहने हुई हैं। हाल ही में, दिशा पटानी ने बटलफ्लाई किक एक्सरसाइज करते हुए एक वीडियो साझा किया था। जिसमें दिशा बिना किसी सहायता के और बिना किसी गलती के बटरफ्लाई किक लगाती नजर आ रही थीं। अभी दिशा अपनी आगामी फिल्म राधे' की शूटिंग में व्यस्त हैं। इस फिल्म में सुपरस्टार सलमान खान और रणदीप हुड्डा भी हैं। फिल्म का निर्देशन प्रभुदेवा ने किया है। हाल ही में सलमान खान ने 7 महीने बाद शूटिंग पर लौटने को लेकर खुशी जताई थी। दिशा केटीना' में भी मुख्य भूमिका निभा रही हैं। इस फिल्म की निमार्ता एकता कपूर हैं। इसमें अक्षय ओबेरॉय और सनी सिंह भी हैं।

## लक्ष्मी बम का सॉन्ग बुर्ज खलीफा रिलीज

अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी की फिल्म लक्ष्मी बम का टाइटल सॉन्ग बुर्ज खलीफा रविवार को रिलीज कर दिया गया है। फैंस काफी समय से गाने का इंतजार कर रहे थे और गाने ने रिलीज होते ही धमाल मचा दिया। अक्षय कुमार ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा, हमने साल के सबसे बड़े डांस ट्रैक को बस अभी रिलीज किया है, ग्रूव के लिए तैयार हो जाएं। सॉन्ग बुर्ज खलीफा में दुबई के खूबसूरत नजारों के बीच शूट किया गया है। गाने में अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी का लुक और केमिस्ट्री ने इसे और खूबसूरत बना दिया है। गाने में अक्षय शेख के अंदाज में तो कियारा हसीना के स्टाइल में नजर आ रही हैं। गाने बुर्ज खलीफा को कंपोज शशि और डीजे खुशी ने किया है और गाने को आवाज भी दी है। लिरिक्स गगन आहूजा ने लिखे हैं। बता दें कि एक दिन पहले अक्षय कुमार ने सोशल मीडिया पर गाने का टीजर रिलीज किया था। अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी की फिल्म लक्ष्मी बम का डायरेक्शन राघव लॉरेन्स ने किया है। फिल्म का निर्माण फॉक्स स्टार स्टूडियोज और केप ऑफ गुड फिल्म्स के बैनर तले किया गया है। यह फिल्म 9 नवंबर को रिलीज होगी।

## तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की अंजली भाभी रियल लाइफ में है काफी ग्लैमरस

टीवी का पॉपुलर शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा इन दिनों काफी सुर्खियों में हैं। शो में बदलाव को लेकर रोज को नई खबर सुनने को मिलती है। हाल ही में शो की कुछ स्टारकास्ट में बदलाव किया गया। सीरियल में अब अंजली भाभी का रोल नेहा मेहता की बजाए सुनैना फौजदार निभा रही हैं। वैसे आपको बता दें कि नई अंजली भाभी यानी सुनैना फौजदार चाहे शो में सिम्पल सलवार सूट में नजर आ रही है लेकिन रियल लाइफ की बात करें तो वे बेहद ग्लैमरस और बोल्ड हैं। सुनैना सोशल मीडिया पर बेहद एक्टिव रहती है। वे अक्सर अपनी हॉट और बोल्ड फोटो इंस्टाग्राम पर शेयर करती रहती है।

सुनैना का सोशल मीडिया अकाउंड फैशनेबल फोटोज से भरा हुआ है जिसमें उनका काफी स्टनिंग लुक देखने को मिल रहा है। 34 साल की सुनैना अक्सर अपने फैन्स के साथ खूबसूरत फोटोज शेयर करती रहती हैं। टीवी शोज में ट्रेडीशनल रोल निभाती आईं सुनैना का ये अलग अंदाज भी फैन्स को खूब पसंद आता है।

सुनैना रियल लाइफ में शादीशुदा हैं। उन्होंने लंबी डेटिंग के बाद 2016 में अपने कॉलेज फ्रेंड कुणाल भंवानी से शादी की। कुणाल एक बिजनेसमैन हैं। सुनैना ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत टीवी शो संतान से की थी। इसके बाद वे सीआईडी, सावधान इंडिया, आहट, एक रिश्ता साझेदारी का, राजा की आएगी बारात, कुबूल है, रहना है तेरी पलकों के छांव में, लगी तुझसे लगन और फियर फाइल्स जैसे कई सीरीयल्स में नजर आईं।

## प्यार का पंचनामा का बनने वाला है तीसरा पार्ट

कार्तिक आर्यन बॉलीवुड के एक मशहूर और उभरते हुए कलाकार है। जिन्होंने पिछली कई हिट फिल्में दी है जिसको लोग देखना काफी पसंद करते है। लेकिन ये बात बहुत कम ही लोग जानते हैं कि कार्तिक आर्यन को बॉलीवुड में पहचान फिल्म प्यार का पंचनामा से मिली है। प्यार का पंचनामा 2 को रिलीज हुए आज पांच साल हो गए है। इस फिल्म के साथ कार्तिक आर्यन और लव रंजन की कई सारी यादे जुड़ी है। जी हां आपको बता दें कि फिल्म प्यार का पंचनामा में एक गाना था शराबी। इस गाने की शूटिंग पता है कहां हुई थी। जब आपको इस बारे में पता चलेगा तो आप खुद भी हैरान हो जाएंगे। आपको बता दें कि शराबी गाने की शूटिंग मंदिर में हुई थी ये वहीं मंदिर है जहां पर दीवार फिल्म में अमिताभ बच्चन ने खड़े होकर मशहूर डायलॉग बोला था। ये मंदिर आज भी फिल्म सिटी में है। जहां पर ना जाने कितनी फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है।

कंचन उजाला
हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob: 8896925119, 9695670357
Email: kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।